DeRicci 108a
McGill 154

# A tous Accords.

| | | | |
|---|---|---|---|
| | | Januarius ht dies xxxi | |
| | | luna xxx | |
| nj | a | Circumcisio dñi. | 1 |
| | b | Octᵉ sc̃i stephani. | 2 |
| xi | c | Octᵉ sc̃i iohis. | 3 |
| | d | Octᵉ sanctorum innocentium. | 4 |
| xxx | e | | 5 |
| vnj | f | Epyphania dñi. | 6 |
| | g | | 7 |
| xvj | a | | 8 |
| v | b | | 9 |
| | c | Paule prime heremite. | 10 |
| xnj | d | | 11 |
| ij | e | | 12 |
| | f | Hylarij epi. | 13 |
| x | g | | 14 |
| | a | Mauri abbis | 15 |

A moy Tabourot. 1606. 8.

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 16 | vnj | c | kl' | |
| 17 | | d | kl' | Anthonij abbis |
| 18 | xb | e | kl' | Prisce virg |
| 19 | nnj | f | kl' | ffabiani & sebastiani. |
| 20 | | g | kl' | |
| 21 | xnj | a | kl' | Agnetis virg |
| 22 | i | b | kl' | Vincentij mris |
| 23 | | c | kl' | Emerentianæ. |
| 24 | yx | d | kl' | |
| 25 | | e | kl' | Conuers. S. Pauli |
| 26 | xbnj | f | kl' | |
| 27 | vj | g | kl' | Caroli Magni |
| 28 | | a | kl' | Agnetis sedo. Pauli herem. |
| 29 | xnnj | b | kl' | Valerij |
| 30 | nj | c | kl' | Potentianæ. |



ffebruari habet dies
xxviij. Luna xxix.

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| | d | | Brigide virg. | 1 |
| vi | e | ſſ | Purific. beate marie. | 2 |
| xxx | f | ſſ | Blasij epi & mris | 3 |
| viij | g | ſſ | | 4 |
| | a | ſſ | Agathe virg | 5 |
| xvij | b | ſd | Dyothee virg. | 6 |
| v | c | ſd | | 7 |
| | d | ſd | | 8 |
| xvj | e | ſd | | 9 |
| iij | f | ſd | Scolastice virg. | 10 |
| | g | ſd | | 11 |
| x | a | ſd | | 12 |
| | b | ſd | Alexij | 13 |
| xviij | c | kl' | Valentini. mris. | 14 |
| vij | d | kl' | | 15 |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 16 | | e | kl' | Juliane virgis. |
| 17 | xv | f | kl' | |
| 18 | xiij | g | kl' | |
| 19 | | a | kl' | |
| 20 | xij | b | kl' | |
| 21 | i | c | kl' | |
| 22 | | d | kl' | Cathedra scī petri. |
| 23 | ix | e | kl' | |
| 24 | | f | kl' | Mathie apli. |
| 25 | viij | g | kl' | |
| 26 | vij | a | kl' | |
| 27 | | b | kl' | |
| 28 | vi | c | kl' | |

Marcius hꝫ dies xxxi
luna xxx.

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| m | d | ſ | Albini epi. & cf. | 1 |
| | e | ſ | | 2 |
| n | f | ſ | | 3 |
| | g | ſ | | 4 |
| xx | a | ſ | | 5 |
| vm | b | ſ | | 6 |
| | c | ſ | Perpetue et felicitatis. | 7 |
| xvj | d | ſd | | 8 |
| v | e | ſd | | 9 |
| | f | ſd | | 10 |
| xm | g | ſd | | 11 |
| n | a | ſd | Gregorij pape. | 12 |
| | b | ſd | | 13 |
| x | c | ſd | | 14 |
| | d | ſd | | 15 |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 16 | xbnj | e | kl' | |
| 17 | bnj | f | kl' | |
| 18 | | g | kl' | |
| 19 | xb | a | kl' | Gabrielis |
| 20 | mj | b | kl' | |
| 21 | | c | kl' | Benedicti abbis |
| 22 | xnj | d | kl' | |
| 23 | i | e | kl' | |
| 24 | | f | kl' | |
| 25 | yx | g | kl' | Annūciatio dñica |
| 26 | | a | kl' | |
| 27 | xbnj | b | kl' | |
| 28 | bj | c | kl' | |
| 29 | | d | kl' | |
| 30 | xmj | e | kl' | |
| 31 | mj | f | kl | |

Aprilis ht dies xxx luna xxix.

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| | g | ſſ | | 1 |
| xj | a | ſſ | | 2 |
| | b | ſſ | | 3 |
| xxc | c | ſſ | Ambrosij epi. | 4 |
| vmj | d | ſſ | | 5 |
| | e | ſſ | | 6 |
| xvj | f | ſſ | | 7 |
| v | g | ſſ | Maria Ægipt. | 8 |
| | a | ſſ | | 9 |
| xmj | b | ſſ | | 10 |
| ij | c | ſſ | | 11 |
| | d | ſſ | | 12 |
| x | e | ſſ | | 13 |
| | f | kl' | Tyburcij & valeriani. | 14 |
| xvmj | g | kl' | Ioachimj | 15 |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 16 | | a | kl' | |
| 17 | xv | b | kl' | |
| 18 | iij | c | kl' | |
| 19 | | d | kl' | |
| 20 | xij | e | kl' | |
| 21 | i | f | kl' | |
| 22 | | g | kl' | |
| 23 | x | a | kl' | Georgij mr̃is |
| 24 | | b | kl' | |
| 25 | xviij | c | kl' | Marci euuangeliste. |
| 26 | vi | d | kl' | |
| 27 | | e | kl' | |
| 28 | xiij | f | kl' | Vitalis mr̃is. |
| 29 | ij | g | kl' | Petrj Martiris. |
| 30 | | a | kl' | |

MAyus hꝫ dies xxxi
luna xxx
Philippi & iacobi. 1
2
Inuencõ scæ crucis 3
Helenæ. 4
5
Johis ant̃ portã lat' 6
7
8
Trãsl' scã nycholay. 9
Gordiani et epimachi. 10
Maioli abbis. 11
12
13
14
15

16 c kl'

17 xb d kl'

18 nj e kl'

19 f kl'

20 xnj g kl' Bernardini ꝛc.

21 i a kl'

22 b kl'

23 yc c kl' Deſiderij

24 d kl'

25 xbnj e kl' Hylarii ꝛc.

26 vj f kl'

27 g kl'

28 xnj a kl'

29 nj b kl'

30 c kl'

31 xa d kl' petronille virg$^{is}$ ꝛc.



Junius hꝫ dies xxx
luna xxix.

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| xxx | c | | Nichomedis mr̃is. | 1 |
| vnj | d | ſ | | 2 |
| | e | ſ | | 3 |
| xvj | f | ſ | | 4 |
| v | g | ſ | | 5 |
| | a | ſ | Claudij epi. | 6 |
| xnj | b | ſ | | 7 |
| nj | c | ſ | Oxedardi epi. | 8 |
| | d | ſ | | 9 |
| x | e | ſ | Barnabe aplī | 10 |
| | f | ſ | | 11 |
| xvnj | g | ſ | | 12 |
| vnj | a | ſ | | 13 |
| | b | kl | | 14 |
| xv | c | kl | Vita et modestꝰ. | 15 |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 16 | m̄j | f | kl' | |
| 17 | | g | kl' | |
| 18 | xm | a | kl' | |
| 19 | i | b | kl' | Octaua et prothi. |
| 20 | | c | kl' | |
| 21 | yx | d | kl' | |
| 22 | | e | kl' | |
| 23 | rom̄ | f | kl' | Vigilia |
| 24 | vj | g | kl' | Nat' scā iohis baptiste |
| 25 | | a | kl' | |
| 26 | xm̄j | b | kl' | |
| 27 | m̄j | c | kl' | |
| 28 | | d | kl' | Vigilia |
| 29 | xj | e | kl' | Petri et pauli aplōy. |
| 30 | | f | kl' | |

# Julius hꝫ dies xxxi.
# Luna xxx.

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| xxx | g | | Theobaldj | 1 |
| vnj | a | ℔ | Procelli & martiniani. | 2 |
| | b | ℔ | | 3 |
| xvj | c | ℔ | Marcelli epi. | 4 |
| v | d | ℔ | | 5 |
| | e | ℔ | | 6 |
| xnj | f | ℔ | Gerualdj. nuris. | 7 |
| nj | g | ℔d | | 8 |
| | a | ℔d | | 9 |
| x | b | ℔d | Septē fratrū. | 10 |
| | c | ℔d | Benedictj | 11 |
| xbnj | d | ℔d | | 12 |
| vnj | e | ℔d | Henricj | 13 |
| | f | ℔d. | | 14 |
| xb | g | ℔d | Bonauenturæ. | 15 |

16 mj a kl' Alexij

17 b kl'

18 xij c kl'

19 v d kl'

20 e kl' Margarete virg'.

21 yc f kl'. Apollinaris

22 g kl' Marie magdalene.

23 xbij a kl'

24 vj b kl' Cristine virg'

25 c kl' Jacobi et xpofori.

26 xmj d kl' Anne matris marie

27 mj e kl'

28 f kl'

29 iv g kl'

30 a kl' Marthe virg'

31 xxi b kl' Germani epi.

Augustus hꝫ dies xxxi. Luna xxx.

vnj c Adnūciá cā petri. 1
d ſſ 2
xvj e ſſ Inuencō cā ſtephi. 3
v f ſſ. 4
g ſſ Trāſfiguratio dñi 5 Dominicꝫ
xnj a ſ̄d 6
ij b ſ̄d Donati epi. & cōf. 7
c ſ̄d 8
x d ſ̄d Vigilia 9
e ſ̄d Laurencij mārs. 10
xvnj f ſ̄d Tyburcij. mārs. 11
vij g ſ̄d 12
a ſ̄d Yppoliti. mārs. 13
xv b kl Vigilia. 14
nj c kl' Assūptio bē marie. 15

16 xij d kl' Rochi
17 i e kl' Oct' scā laurencij. Mammetis
18 f kl'
19 ix g kl'
20 a kl' Bernardi abbis.
21 xviij b kl'
22 vj c kl' Ludouicj
23 d kl' Genesij. ōnis.
24 xvij e kl' Bartholomei apli
25 ij f kl' Ludouica regis.
26 g kl'
27 xj a kl' Rufi mris.
28 b kl' Augustini epi.
29 xix c kl' Decol'. s iohis baptiste.
30 viij d kl'
31 e kl' ffiacri cōf'.

Septembr hꝫ dies xxx. Luna xxx.

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| xvj | f | | Egidy abbis | 1 |
| v | g | ℞ | Iusti epi et ꝛc. | 2 |
| | a | ℞ | | 3 |
| xvij | b | ℞ | | 4 |
| ij | c | ℞ | | 5 |
| | d | Jd | | 6 |
| x | e | Jd | | 7 |
| | f | Jd | Natiuitas bte marie. | 8 |
| xviij | g | Jd | | 9 |
| vij | a | Jd | | 10 |
| | b | Jd | | 11 |
| xij | c | Jd | | 12 |
| iij | d | Jd | | 13 |
| | e | kl | Exalt. cꝛc cruas. | 14 |
| xij | f | kl | | 15 |

16 i g kl' Eufemie virg'.
17 a kl' Lauerti epi et ꝯf'.
18 ix b kl'
19 c kl'
20 xviij d kl' Vigilia
21 vij e kl' Mathei apli.
22 f kl' Mauricij ꝯf'.
23 xiij g kl' Virginū mrs
24 vij a kl'
25 b kl'
26 xi c kl'
27 d kl Cosme et damiani.
28 x c kl'
29 viij f kl' Michaelis archāgeli
30 g kl' Hieronimi plbr̄.

A

Octobr hꝫ dies xxxj
luna xxx.

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| xvj | b | | Remigy epi t cf. | 1 |
| v | c | ſ | | 2 |
| | d | ſ | ffranala cõf. | 3 |
| xvij | e | ſ | | 4 |
| ij | f | ſ | ffidis virgis | 5 |
| | g | ſ | | 6 |
| x | a | ſ | | 7 |
| | b | ſ d̃ | Dionisij 2 soc̃ ius. | 8 |
| xviij | c | ſ d̃ | | 9 |
| viij | d | ſ d̃ | | 10 |
| | e | ſ d̃ | | 11 |
| xv | f | ſ d̃ | | 12 |
| vij | g | ſ d̃ | Calixti pape. | 13 |
| | a | ſ d̃ | Leonardi abbis. | 14 |
| xiij | b | ſ d̃ | | 15 |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 16 | | f | kl' | |
| 17 | yx | c | kl' | |
| 18 | | d | kl' | luce autangelistc. |
| 19 | xcvj | e | kl' | |
| 20 | vj | f | kl' | Undecī milliū virginū. |
| 21 | | g | kl' | |
| 22 | xvij | a | kl' | |
| 23 | vij | b | kl' | |
| 24 | | c | kl' | |
| 25 | xi | d | kl' | Crispini t crispiniani. |
| 26 | | e | kl' | |
| 27 | xxx | f | kl' | Vigilia. |
| 28 | vij | g | kl' | Symonis et iude. |
| 29 | | a | kl' | |
| 30 | xcix | b | kl' | |
| 31 | v | c | kl' | Vigilia. |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| | | | Nouember hꝫ dies xxx. | |
| | | | Luna xxx | |
| | d | | Oūm scōꝝ. | 1 |
| xnj | e | ſ | Cōmē. defūctoꝝ. | 2 |
| nj | f | ſ | | 3 |
| | g | ſ | Caroli Borromei· | 4 |
| x | a | ſ | Canonized 1610 | 5 |
| | b | ſd | | 6 |
| xbnj | c | ſd | | 7 |
| vj | d | ſd | Quatuoꝝ coronatoꝝ | 8 |
| | e | ſd | Theodoꝛi mr̄is. | 9 |
| xb | f | ſd | Leonis pāpe. | 10 |
| nj | g | ſd | Martini epi. | 11 |
| | a | ſd | | 12 |
| xnj | b | ſd | | 13 |
| i | c | kl | | 14 |
| | d | kl | | 15 |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 16 | xc | e | kl' | |
| 17 | | f | kl' | |
| 18 | xb ij | g | kl' | |
| 19 | b ij | a | kl' | Romani mrs. |
| 20 | | b | kl' | |
| 21 | xa ij | c | kl | Columbani abbis. |
| 22 | a ij | d | kl' | Cathe virgis. |
| 23 | | e | kl' | Clementis pape. |
| 24 | g ij | f | kl' | Grilogoni mris. |
| 25 | | g | kl' | Katherine virg' |
| 26 | xg c | a | kl' | Linu pape & mris. |
| 27 | f a ij | b | kl' | Agricole et vitalis. |
| 28 | | c | kl' | |
| 29 | xf ij | d | kl' | Vigilia. |
| 30 | f | e | kl' | Andree apli. |

Decēber hꝫ dies xxxi
luna xxx.

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| xm | f | | Circumcisio dñi. | 1 |
| n | g | S | | 2 |
| | a | S | | 3 |
| x | b | S | Barbarę uirg. | 4 |
| | c | S | | 5 |
| xm | d | Ꝺ | Nicolaj | 6 |
| vn | e | Ꝺ | Octa sc̄i andree. | 7 |
| | f | Ꝺ | Conceptio B. Mariæ | 8 |
| xb | g | Ꝺ | | 9 |
| m | a | Ꝺ | | 10 |
| | b | Ꝺ | | 11 |
| xn | c | Ꝺ | | 12 |
| i | d | Ꝺ | Luciæ uirg. | 13 |
| | e | K | | 14 |
| yx | f | K | | 15 |

16 g kl'

17 xvij a kl' Ignatij epi t mrs.

18 vi b kl'

19 c kl'

20 xiiij d kl'

21 nj e kl' Thome apli.

22 f kl'

23 xi g kl'

24 a kl' Vigilia

25 x b kl' Natiuitas dñi

26 viij c kl' Stephi pthomrs.

27 d kl' Johis. euangeliste

28 vj c kl' Scor innocentiu.

29 v f kl' Thome apli t mrs.

30 g kl'

31 iiij a kl' Silueste papa.



Scdm̃ iohannem

n principio erat
verbū et verbum
erat apud deum

et deus erat verbū. Hoc erat i
principio apud deū. Omnia
per ipm facta sunt et sine
ipso factū est nichil. Quod
factū est m ipso vita erat et
vita erat lux hominū. et lux
in tenebris lucet et tenebre
eā non comprehenderunt. fuit
homo missus a deo cui no
men erat iohes. Hic venit i
testimoniū ut testimoniū
perhiberet de lumine. ut omnes
crederent per illū. Non erat
ille lux. sed ut testimoniū
perhiberet de lumine. Erat lux
vera que illuminat omnē

hoiem veniente in hunc mū
dū. In mundo erat et mun
dus per ipm factus est et
mundus eū nō cognouit.
In propria venit et sui eum
non receperunt. Quotquot
autē receperunt eum dedit
eis potestatē filios dei fieri
hys qui credunt in nomi
ne eius. Qui non ex sanguini
bz neqz ex voluptate carnis
neqz ex voluntate viri sed
ex deo nati sunt. Et verbū
caro factū est et habitauit
in nobis. Et vidimus glo
riā eius gloriam qī vnige

nuti a patre plenum gracie
et veritatis. Sdm̄ lucam :~



In illo tempore.
Missus est angelus gabriel a deo
in ciuitatē galilee cui nomē nazareth. ad
virginē desponsatā viro cui
nomen erat ioseph de domo
dauid. et nomen virginis
maria. Et ingressus angls
ad eā dixit. Aue gra plena
dns tecū benedicta tu i mulieribz. Que cū audisset tur
bata est in sermone eius et
cogitabat qualis esset ista

salutacio. Et ait angelus ei.
Ne timeas maria inuenisti
enim gratiam apud dnm. Ecce
concipies in vtero et paries
filium et vocabis nomen eius
ihm. hic erit magnus et fi
lius altissimi vocabitur. Et
dabit illi dns deus sedem dauid
patris eius et regnabit in domo
iacob in eternum et regni eius
non erit finis. Dixit autem
maria ad angelum. Quomodo
fiet istud qum virum non cog
nosco. Et respondens angls
dixit ei. Spūs scūs superueniet in
te et virtus altissimi obumbra

bit tibi. Jdeoq; et quod nascetur
ex te scm̃ vocabitur filius dei.
Et ecce helizabet cognata tua et
ipa concepit filiū in senectu
te sua. Et hic mensis est sextus
illi q̃ vocatur sterilis quia nō
erit ipossibile apud deū omne
verbū. Dixit autē maria ad
angelū. Ecce ancilla dñi fiat
michi scdm̃ verbū tuū. O. g.

Scdz matheum.

Cum natus esset
ihc in bethleem
iude in diebus
herodis regis. ecce magi ab
oriente venerunt ierosolimā

dicentes. Ubi est qui natus ē
rex iudeoꝝ. Vidimus enī stel
lam eius in oriente et ve-
nimus adorare eī. Audiens
autē herodes rex turbatus est
et omnis hierosolyma cum
illo. Et congregans omnes
principes sacerdotū et scribas
populi sciscitabatur ab eis
ubi xps nasceretur. At illi di
xerunt ei. In bethleem iudę.
Sic enī scriptū est per prophe
tā. Et tu bethleem terra iuda
nequaq̄ minima es in prin
cipibz iuda. Ex te enī exiet dux
qui regat populū meū israel.

Tunc herodes dam vocatis ma
gis diligenter didicit ab eis
tempus stelle que apparuit eis.
Et mittens eos in bethlee dixit.
Ite et interrogate diligenter de
puero et cū inueneritis renū
ciate mihi ut et ego veniens
adorē eum. Qui cū audissent
regē abierunt. Et ecce stella q̄
viderant in oriente antecedebat
eos usq; dū veniens staret su
p̄a ubi erat puer. Videntes
autē stellā gauisi sūt gaudio
magno valde. Et intrantes do
mū inuenerunt puerū cum
maria matre eius. Et pro-

dentes adorauerunt eū. Et aper
tis thesauris suis obtulerunt
ei munera aurū thus et mur
rā. Et responso accepto in somp
nis ne redirent ad herodē per
alium viā reuersi sunt in re
gionē suā. Dño q̄. Sdñs maxiū
in illo tpe. Recū
bentibz undecī
discipulis appa
uit illis ihs. Et
exprobrauit incredulitatem
illoz et duritiā cordis. quia
hys qui viderant eū resurre
xisse a mortuis non credide
runt. Et dixit eis. Euntes in

mundū vniuersū predicate euā
angelū omni creature. Qui
crediderit et baptizatus fuerit
saluus erit. Qui vero nō credi
derit condēpnabitur. Signa
autē eos qui crediderint hec
sequentur. In nōie meo de
monia eiicient. Linguis loquē
tur nouis serpentes tollent. Et
si mortiferū quid biberint nō
eis nocebit. Super egros ma
nus imponent et bene habe
bunt. Et dns quidem ihūs
postquā locutus est eis. al
sumptus est in celum et se
det a dextris virtutis dei. illi

autē p̄fecti p̄dicauerunt
ubiq; dño cooperante et ser
monē confirmante sequen
tib; signis. Deo grās.

Domine labia
mea aperies
Et os meum
annuntabit

laudem tuam.

Eas in adiutorium me
um intende.

Domine ad adiuuan
dum me festina.

Gloria patri et filio et spi
ritui sancto.

Sicut erat in principio t
nunc et semper et in secula
seculorum. Amen. Alleluya. tractat.

Aue maria gra plena dns tecum.

Venite exultemus dño
iubilemus deo saluta
ri nostro preoccupemus faciẽ
eius in confessione t in psal
mis iubilemus ei. Aue maria

gracia plena. dñs tecum.

Qm deus magnus dñs
et rex magnus sup̄er om̄s
deos qm̄ non repellet dñs
plebem suā quia in manu
eius sunt oēs fines terre et al
titudines montiū ipe cōspi
cat. ℣. dñs tecum

Qm ipsius est mare t ipe
fecit illud et aridam fundā
uerunt manus eius venite
adoremus et procidamus an
te deū ploremus coram dño
qui fecit nos quia ipse est
dñs deus nr̄. nos autē pp̄ls
eius et oues pascue eius. Aue

maria gra plena dns tecum.

Hodie si vocē eius audieritis nolite obdurare corda vra sicut in exacerbatione secundum diem tēptationis in deserto ubi temptauerunt me patres vestri probauerunt et viderunt opera mea. Dns tecum.

Quadraginta annis proximus fui generationi huic et dixi semper hi errant corde. ipi vero non cognouerunt vias meas quibus iuraui in ira mea si introibunt in requiē meam. Ave maria gra
ta plena dns tecum

Gloria ꝑ̃ et filio et spu
tu sancto sicut erat in prin
cipio et nunc et semper et in
secula seculoꝝ. Amen. Domi
nus tecum. Ave maria gr̃a ple
na dns tecum. Hymnus.

Quem terra pontus
ethera colunt adorãt
predicant trinã regentẽ ma
chinã claustrum maree
baiulat

Qui luna sol et dia dieꝝ
uicissim per tẽpora pertusa cli
gra gestant puelle uiscera.

Sacrata mater munere cu
ius supernus artifex mundũ

pugillo continens ventris
sub archa claustus est
Beata cui nunciao secūda
sancto spū deliderat⁹ gentī
bz aut⁹ per alui fusus est.
Gloria tibi dñe qui natus
est de virgine cum patre sco
spū in sempiterna secula.
Antex. ar Benedicta tu. ps
Omine dñs noster
quā admirabile est
nomen tuū in vniuersa tra.
Qm elevata est magnificē
cia tua super celos
Ex ore infantiū et lactē
tium perfecisti laudē p̄opter

inimicos tuos ut destruas
inimicū et vltorem.
Quā videbo celos tuos opera
digitorū tuorū lunam et stel
las que tu fundasti.
Quid est homo quod me
mor es eius aut filius hois
quā visitas eum.
Minuisti eum paulomi
nus ab angelis gloria et ho
nore coronasti eum et con
stituisti eum super opera
manuū tuarū.
Omnia subiecisti sub pedi
bus eius oues et boues vni
uersas insuper et pecora cāpi

Voluers ad et psalcs ma
ns qui perambulant semi
tas maris. ℟
Omine dns noster quā
admirabile est nomen tuū
in vniuersa terra ℟
Gloria patri. ant̄ Benedicta
tu in mulieribꝫ et benedictus fruc
tus ventris tui. ant̄ Sicut mirabilis
Celi enarrant glorā
dei et opera manuū
eius annunciat firmamētū.
Dies diei eructat verbum
et nox nocti indicat sciam.
Non sunt loquele neq; ser
mones quoꝝ non audiātur

verbs eorum

In omnem terrā exiuit so
nus eor et in fines orbis terre
verba eorum

In sole posuit tabernaculū
suum et ipe tanq̄ sponsus pro
cedens de thalamo suo.

Exultauit ut gigas ad cur
rendā viam a summo celo e
gressio eius

Et occursus eius usq; ad
summū eius nec est qui se
abscondat a calore eius.

Lex dñi immaculata conuer
tens aīas testimonium dñi fi
dele sapientiā prestās parvulis.

Iustitiae dñi rectę letifican
tes corda preceptū domini lu
cidū illuminans oculos.
Timor dñi scs permanet
in scm seculi iudicia dñi
vera iustificata in semetipsa.
Desiderabilia super aurū
et lapidē pretiosum multū
et dulciora super mel et fa
uum.
Etenim seruus tuus cu
stodit ea in custodiendis il
lis retributio multa.
Delicta quis intelligit ab
occultis meis munda me do
mine et ab alienis parce

ſeruo tuo.

Si mei non fuerint do
minati tunc ĩmaculatus
ero et emundabor a delicto
maximo.

Et erunt ut cõplaceant
eloquia oris mei et medita
cio cordis mei in conſpectu
tuo ſemper.

Dñe adiutor meus et re
demptor meus.

Gloria pri. ant Sicut mir
ra electa odorem dediſti ſuaui
tatis ſancta dei genitrix. ant

Ante thronum. pſalm9
omnium eſt tercia et ple

nitudo eius orbis terrae et
vniuersi qui habitant in eo.
Quia ipse super maria
fundauit eum et super flu
mina preparauit eum.
Quis ascendet in montem
dñi aut quis stabit in loco
sancto eius
Innocens manibus et mun
do corde qui non accepit in
vano animam suã nec iurauit
in dolo proximo suo.
Hic accipiet benedictionẽ
a dño et misericordiam a deo salu
tari suo.
Hec est generatio quaerẽ

aum eum quærentiū facie
ꝺa iacob.

Attollite portas principes
vestras et elevamini porte
eternales et introibit rex glie.

Quis est iste rex glie dns
fortis et potens dominus po
tens in prelio.

Attollite portas principes
vras t elevamini porte eterna
les et introibit rex glie

Quis est iste rex glie dns
virtutū ipe est rex glie.

Gloria pri. añ. Ante thronum
huius virginis frequentate nobis
dulcia cantica dragmatis. ℣ Dic

fula est grā in labijs tuis. ℟ Propt
erea benedixit te deus meternum.
ant Specie tua. psalm xliiii.
Eructauit cor meum
verbū bonum dico
ego opera mea regi.
Lingua mea calamus
scribe velociter scribentis.
Speciosus forma pre filijs
hoim diffusa est gracia in
labijs tuis propterea bene
dixit te deus meternū.
Accingere gladio tuo su
per femur tuū potentissime.
Specie tua et pulcritudi
ne tua intende prospere pro

cede et regna
Propter veritatē et man
suetudinē et iustitiā et de
ducet te mirabiliter dextе
ra tua
Sagitte tue acute ppl̄
sub te cadent in cor da mu
nicor regis
Sedes tua deus in sēm
scli virga directionis vir
ga regni tui.
Dilexisti iustitiā et odi
sti iniquitatē propterea un
xit te deus deus tuus oleo
letitie pre consortibz tuis.
Mira et gutta et casſia

a vestimentis tuis a domibz
ebureis ex quibz delectauc
runt te filie regum in ho
nore tuo
Astitit regina a dextris
tuis in vestitu deaurato cir
cumdata varietate
Audi filia et vide et in
clina aurē tuā et obliuiscē
populū tuū et domum
patris tui
Et concupiscet rex decor
tuū qm̄ ipse est dns deus
tuus et adorabunt eum.
Et filie tyri in muneribz
vultū tuū deprecabūtur os

dnumes

diuites plebis

Omnis gloria eius filie re
gis ab intus in fimbrijs au
reis circũamicta varietatibꝫ.
Adducentur regi virgines
post eam proxime eius offe
rentur tibi

offerentur tibi i leticia
et exultatione adducentur
in templũ regis

Pro patribꝫ tuis nati sunt
tibi filij constitues eos prin
cipes sup omnẽ terrã.
Memores erunt nois tui
dñe in omni generatione et
generationem

Propterea pli confitebu
tur tibi ineternu et in seau
lum seculi

Gloria psi. ant. Specie tua
et pulcritudine tua intende pro
spere procede et regna. ℟ Adiuuabit.

Deus noster refugiu
et virtus adiutor i
tribulationibz que inuenie
runt nos nimis

Propterea no timebimus
dum turbabitur terra et trā
ferantur mōtes i cor maris.
Sonuerunt et turbate sūt
aque eor conturbati sunt
montes in fortitudine eius.

Fluminis impetus letificat
ciuitatē dei sācificauit taber
naculū suū altissimus.
Deus in medio eius non
cōmouebitur adiuuabit eā
deus mane diluculo.
Conturbate sunt gentes
et inclinata sunt regna de
dit voce suā mota ē terra.
Dis uirtutū nobiscū sus
ceptor noster deus iacob.
Venite et videte opera dñi
que posuit prodigia sup ter
rā auferens bella usq; ad
finem terre
Arcū conteret et confrin

get arma et scuta cōburet igni.
Vacate et videte quīm ego
sum deus exaltabor in gētib⁹
et exaltabor in terra.
Dns virtutū nobiscū sus
ceptor noster deus iacob.
Gloria pri. añ. Adiuuabit eā
deus vultu suo deus in medio eius
nō cōmouebitur. ℟. Sicut lētātiū.
Fundamenta eius in
montib⁹ scis diligit
dns portas syon super oīa ta
bernacula iacob
Gloriosa dicta sunt de ti
uitas dei.
Memor ero raab et babilo

ms sacrau mc
ec alienigare et tyrus t
populus ethiopum hij fuc
runt illic
unquid syon dicet hō et
homo natus est in ea et ipse
fundauit eā altissimus.
ns narrabit in scripturis
plōr et principū horū qui fu
erunt in ea
Sicut letantiū oīm nostrū
habitatio est in te.
Gloria pri. ant Sicut letantiū
oīm nostrū hītatio est in te sancta
dei genitrix. ℣ Adiuuabit eā deus
vultu suo. ℟ Deus in medio eius nō

ōmouebitur. ℣. Gaude maria.

Cantate dño canticū nouū cantate dño omnis terra

Cantate dño et benedicite nomini eius annūciate de die in diē salutare eius.

Enarrate inter gentes gloriam eius in omnibus populis mirabilia eius.

Quōm magnus dñs et laudabilis nimis terribilis est super omnes deos

Quōm oēs dij gentiū demonia dñs autē celos fecit.

Confessio et pulcritudo i

conspectu eius scā̃ omnia et
magnificencia in sanctifi
catione eius.

Afferte dño patrie gentiū
afferte dño gliam et honorē
afferte dño gloriā nōi eius.
Tollite hostias et introite
in atria eius adorate dñm
in atrio scō eius

Cōmoueatur a facie eius
vniuersa terra dicite in gen
tibz qa dñs regnauit

Et enī correxit orbē terre
qui non cōmouebitur iudi
cabit pplōs in equitate.

Letentur celi et exultet tra

cōmouecatur mare et plenitu
do eius gaudebunt campi et
omnia que in eis sunt. ℣
Tunc exultabunt omnia
ligna siluar a facie dñi quia
venit qñ venit iudicare terrā.
Iudicabit orbē terre in eq̄
tate et populos in veritate sua.
℣ Gloria p̄ri. ant̄ Gaude maria
virgo cunctas hereses sola interemi
sti in vniuerso mundo. ant̄. Dig
nare me. ps̄ Dauid.
ns regnauit exultet
terra letentur insule multe.
Nubes et caligo in circu
itu eius iustitia et iudiciū co

rectio sedis eius.

Ignis ante ipm p;cedet et
inflammabit in circuitu inimi
cos eius.

Illuxerunt fulgura eius
orbi terre vidit et cōmota
est terra.

Montes sicut cera fluxerūt
a facie dñi a facie domini
omnis terra.

Enuntiauerunt cēli iu
stitiā eius et viderunt oēs pp̄li
gloriam eius.

Confundantur oēs qui a
dorant sculptilia et qui gloriā
tur in simulacris suis.

Adorate eum oēs angeli e
ius audiuit t letata est syon.
Et exultauerunt filie iude
propter iudicia tua dñe.
Quia tu dñs altissimus su
per omnē terrā nimis exal
tatus es super oēs deos.
Qui diligitis dñm odite
malū custodit dñs animas
sanctoꝝ suoꝝ de manu peccato
ris liberauit eos
Lux orta est iusto t rectis
corde letitia
Letamini in dño et con
fitemini memorie sācti
tionis eius.

Gloria patri. ℟. Dignare me
laudare te virgo sacrata da mihi
virtutem contra hostes tuos. ℟
Post partum. Plalmus ꝺ̄
Cantate dño cantacū
nouū quia mira
bilia fecit
Saluauit sibi dextera eius
et brachiū sanctū eius
Notum fecit dns salutare
re suū ante conspectū gentiū
reuelauit iustitiā suam.
Recordatus est mīe sue et
veritatis sue domui ysrl'.
Viderunt oēs termini terre
salutare dei nostri.

Iubilate deo oīs terra can
tate et exultate et psallite.
Psallite dño in cythara in
cythara et voce psalmi in tu
bis ductilibz et voce tube cornee.
Iubilate in conspectu regis
dñi moueatur mare et ple
tudo eius orbis terrar et vni
uersi qui habitant in eo
Flumina plaudent ma
nu simul montes exulta
bunt a cōspectu dñi quia ve
nit qm̄ venit iudicare terrā.
Iudicabit orbē terrar in
iustitia et pplōs in equitate.
Gloria patri. aīe. post partū

virgo nunquam permansisti dei genu
trix intercede pro nobis. ℣ Dif
fusa est gracia in labijs tuis. ℟
propterea benedixit te deus in eter
nū. Pater nr. Et ne nos Benedictio

Deabz et meritis bea
te marie virginis t
oīum sanctorz perducat nos dns
ad regna celorz. Amen.
Jube domne benedicere. Nos cū prole
pia benedicat nos virgo maria. amē.

In omnibz Lcō pma.
Requiē quietum et in
hereditate dñi morabor tuc
precepit et dixit michi arca
tor omnium et qui creauit me

requieuit in tabernaculo meo
et dixit michi in iacob inhabi
ta et in isrl hereditare et in
electis meis mitte radices.
Tu autē dñe miserere nri.
Deo grās. ℟ Sancta et imacu
lata virginitas quibz te laudibz
referā nescio. Quia quē cēli capere
non poterant tuo gremio contuli
sti. ℣ Benedicta tu in mulieribz
et benedictus fructus ventris tui.
Quia quē. Jube domne benedicere.

Lectio secunda.

Et sic in syon firmata
sum et in ciuitate

sanctificata simuliter requi
eui et in ihrlm̃ potestas mea
Et radicaui in populo hono
rificato et in partes dei mei
hereditas illius et in plena
tudine sc̃oꝝ detencio mea.
℟m̃. Beata es maria que dñm̃
portasti creatorē̃ mundi. genuisti
qui te fecit et in eternū permanes
virgo. ℣. Aue maria gr̃a plena
dñs tecum. Genuisti. Jube dñe
benedicere. Per virgine matre cō
cedat nobis dñs salutē̃ et pacem.

In uali Lectio tercia.

Cedrus exaltata sū
in libano. et quasi cypressus

cypressus in monte syon ꝙ
palma exaltata sum in ca
des. Et quasi plantacio ro
se in iherico. quasi oliua
speciosa in campis. Et qua
si platanus exaltata sũ
iuxta aquas. in plateis si
cut cynamomũ et balsa
mũ aromatizans odorem
dedi quasi myrra electa de
di suauitatem odoris. Tu
altẽ. Rñ. felix namq; es sacra
virgo maria et omñi laude dig
nissima. quia ex te ortus est sol
iustitiae xps deus noster. ℣. Ora
pro pplo interuenit pro clero ītercē

℟ pro devoto

de pio deuoto femineo sexu. sentiant
omnes tuū uniuersum quicūq; celebrāt
tuam cōmemorationē. Quia ex te
ortus. Gloria patri et filio et spūi
tui sancto. Quia ex te

In laudibus.

eus in adiuto
rium meum
intende
Domine ad

adiuuandū me festina.

Gloria pī. ℟. Adapta est. ps

Dominus regnauit de
corem uiductus est
uiductus est dns fortitudinē
et precinxit se.

Et enī firmauit orbē ter
re qui nō cōmouebitur.

Parata sedes tua deus ex
tunc a sclō tu es

Leuauerunt flumina dne
leuauerunt flūia uocē suam
Leuauerunt flūia fluctꝰ
suos a uocibꝫ aquaꝝ multaꝝ.

Mirabiles elationes ma
ris mirabilis in altis dns.

Testimonia tua credibilia facta sunt nimis domū tuā decet sanctitudo dñe in longitudinē dierum. ℟.

Gloria patri. añ Assumpta est maria in celū gaudent angeli laudantes benedicant dñm. ℟. Maria virgo. plalmus dauid

Iubilate deo oīs terra seruite dño ī letitia. Introite in conspectu eius. in exultatione ℟.

Scitote qm̄ dns ipe est deus ipe fecit nos et nō ipi nos. Populus eius et oues pascue eius introite portas eius

in confessione atria eius i hym
nus confitemini illi.

Laudate nomen eius qñ
suauis est dñs meternũ mia
eius et usq; in generatione t
generationẽ veritas eius.

Gloria patri. ant. Maria vir
go assumpta est ad etherẽ thala
mũ in quo rex regũ stellato sedet
solio. ℣. In odorem. ps dauid.

Deus deus meus ad te
de luce vigilo

Sitiuit in te aia mea qꝑ
multiplicatr tibi caro mea.

In terra deserta in via et
inaquosa sic in scõo apparui

tibi ut videreꝫ virtutē tuā
et gloriam tuā

Quīꝫ melior est mia tua
super vitas labia mea lau
dabunt te

Sic benedicā te in vita
mea et in nōīe tuo leuabo
manus meas

Sicut adipe et pinguedi
ne repleatur aīa mea et la
bys exultationis laudabit
os meum.

Si memor fui tui super
stratum meū in matutinis
meditabor in te quia fui
sti adiutor meus

Et in velamento alaꝝ tuarum exultabo adhesit aīa
mea post te me suscepit dex
tera tua

Ipi vero in vanū quesie
runt aīam meā introibūt
in inferiora terre tradētur
in manus gladij partes vul
pium erunt

Lex vero letabitur in deo
laudabuntur oēs qui iurat
in eo quia obstructū est os
loquentiū iniqua. ps dō.

Deus misereatur nrī
et benedicat nobis
illūīet vultū suū sup nos

et misereatur nostri
Et cognoscamus in terra
viā tuā in omnibz gētibz salu
tare tuum
Confiteantur tibi populi
dē confiteantur tibi ppli omnes.
Letentur et exultent gētes
quōm iudicas pplōs in equitate
et gentes in terra dirigis
Confiteantur tibi ppli dē
confiteantur tibi ppli omes terra
dedit fructū suum
Benedicat nos deus dē nr
benedicat nos et metuant eū
omnes fines terre
Gloria pr̄i. ℟. In odorem un

quentoz tuoz cuctorum adolescen
tule dilexerunt te nums. ant. Be
nedicta filia. ps dñi.
Benedicite oia opera
dñi dño laudate et superexal
tate eũ in secula
Benedicite angeli dñi dño
bened̃ eũ dño
Bened aque oẽs que super
celos sunt dño bened oẽs vir
tutes dñi dño
Bened sol et luna dño
bened̃ oĩs spũs dei dño
Bened ymbꝛ et nues dño
bened̃ oĩs spũs dei dño.
Bened ignis et estus dño

benedꝯ frigus et estas dñō.
Benedꝯ rores et pruina dñō
benedꝯ gelu et frigus dñō.
Benedꝯ glacies et nives
dñō benedꝯ noctes t dies dñō.
Benedꝯ lux et tenebre dñō
benedꝯ fulgura t nubes dñō.
Benedicat terra dñm lau
det et superexaltet eū in scla.
Benedꝯ montes et colles
dñō benedꝯ vniuersa germi
nantia in terra dñō.
Benedꝯ fontes dñō benedꝯ
maria et fluuia dñō.
Benedꝯ cete et omnia que
mouentur in aquis dñō

benedꝯ oēs volucres celi dño.
Benedꝯ oēs bestie et pecora
dño benedꝯ filij hoīm dño.
Benedicat israel dñm laud
det t superexaltet eū in scla.
Benedꝯ sacerdotes dñi dño
benedꝯ seruu dñi dño
Benedꝯ spūs et aīe iustor
dño benedꝯ sca et humiles
corde dño
Benedꝯ ananīa azaria mi
sael dño laudate et superexal
tate eum in scla
Benedicamus patrē et fi
lium cū sancto spū laude
mus et superexaltemus eū

in secula. ✠

Benedictus es dñe in firmamento celi laudabilis et gloriosus et superexaltatus in secula. Amen. ℟. Benedicta filia tu a dño qua p te fructum vite cõmunicauimus. ℟ Pulcra es. psalmus dauid.

Laudate dñm de celis laudate eum in excelsis ✠

Laudate eum oēs angeli eius laudate eū omnes virtutes eius ✠

Laudate eū sol et luna laudate eū stelle et lumen.

Laudate eum omnes celi celoꝝ et
aque que super celos sunt laud
ent nomen dñi
Quia ipe dixit et facta sunt
ipse mandauit et creata sunt.
Statuit ea in eternum et in
seculum seculi preceptum posu
it et non preteribit
Laudate dñm de terra dra
cones et omnes abyssi
Ignis grando nix glac
es spus procellarum que faciunt
verbum eius
Montes et omnes colles lig
na fructifera et omnes cedri.
Bestie et universa pecora

serpentes et volucres pennate.
Reges terre et oēs populi
principes et oēs iudices terre.
Iuuenes et virgines se
nes cū iuuenibz laudent
nomen dnī quia exaltatū
est nomen eius solius.
Confessio eius sup cēlū
et terrā et exaltauit cornu
ppli sui.
Ymnus omnibz sanctis eius
filijs isrl' ppli appropin
quanti sibi.
Cantate dño canticum
nouū laus eius in eccliā
sanctorum.

Letetur ifrl'm eo q̃ fecit
eum et filius ſyon exultant
in rege ſuo.
Laudent nomen eius
in choro in tympano et
pſalterio pſallant ei.
Quia beneplacitum eſt
dño in pplo ſuo et exalta
uit manſuetos in ſalute.
Exultabunt ſc̃i in gla
letabuntur i cubilibz ſuis.
Exultationes dei in gutu
re eoz et gladij ancipites
in manibz eoz
Ad faciendã vindictam
in nationibz increpatiões

in populis.

Ad alligandos reges eorū
cōpedibꝫ et nobiles eorū ma
nicas ferreas.

Ut faciant in eis iudiciū
conscriptū. gloria hec est oībꝫ
sanctis eius. Psalmus dō.

Laudate dñm in
sanctis eius laudā
te eum in firmamento vir
tutis eius

Laudate eum in virtuti
bꝫ eius laudate eū scdm mul
titudinē magnitudis eius.

Laudate eum in sono
tube laudate eū in psalterio

et cythara

et cythara.

Laudate eum in tympano
et choro laudate eum in cor
dis et organo

Laudate eū in cymbalis
bene sonantibꝫ laudate eum
in cymbalis iubilationis omꝭ
spꝰ laudet dñm

Gloria patri. Aīe Pulcra es
et decora filia ihrlm terribilis ut ca
stroꝝ acies ordinata. Capitulū.

Viderunt eam filie syon beatissimā predi
caverunt et regine laudaue
runt eā. Deo grās. Ymnꝰ.

Gloriosa dña excelsa

supra sydera qui te creauit
prouide lactasti sacro vbere.
Quod eua tristis abstu
lit tu reddis almo germi
ne nitrent ut astra flebiles
celi fenestra facta es
Tu regis alti ianua et
porta lucis fulgida vtram
data per virginē gentes re
dempte plaudite
Maria mater gr̄e mater
mīe tu nos ab hoste protege
et hora mortis suscipe
Gloria tibi dñe qui na
tus es de virgine cum pre
sancto spū in sempiterna

seculā. Amen. ℣. Benedic
ta tu in mulieribꝫ. ℟. Et bene
dictus fructus ventris tui. ant
℣ Btā dei genitrix. psalmus.

Benedictus dns deus
isrl quia visitauit
et fecit redēptionē plebis sue.
Et erexit cornu salutis
nobis in domo dauid pu
eri sui
Sicut locutus est per os
sanctoꝝ suoꝝ qui a seculo
sunt prophetaꝝ eius.
Salutem ex inimicis no
stris et de manu oīm qui
oderunt nos.

Ad faciendã miam cum
patribz nostris et memora
re testamenti sui sancti.
Iusiurandũ qđ iurauit
ad abraham patrẽ nostrũ da
turũ se nobis
Et hoc timore de manu
inimicor nostror liberati ser
uiamus illi.
In sanctitate et iustitia
coram ipso oibz diebz nris.
Et tu puer propheta al
tissimi vocaberis prebis enim
ante faciem dñi parare vi
as eius
Ad dandã sciam salu

tis plebi tuus in remissionē
peccatorū eōr
per viscera mīe dei nostri
in quibus visitauit nos oriens
ex alto
Illuminare his qui in
tenebris et in umbra mortis
sedent ad dirigendos pedes
nostros in viam pacis.
Gloria pī. ℟. Beata dei ge
nitrix maria virgo perpetua tem
plū dñi sanctarū spūs sā sola hanc
exemplo placuit dño ihū xpō ora
[illegible] pro nobis
neo sexu. Kyrieleyson. Xpēleyson
Kyrieē. Dñe exaudi. Et da. Oremus.

eus qui de Oratio
beate marie virgis
utero verbū tuū angelo nū
ciante carnē suscipere volu
sti p̄ca supplicabz tuis ut q̄
vere eam dei genitricē credi
mus eius apud te intercessi
onibz adiuuetur. Per xpm.
De oīb; scis. anti. Sancti dei
omnes intercedere dignentur pro
nostra omniq; salute. ℣ Letamī
ni in dño et exultate iusti. ℟
Et gliamini oēs recti corde. Orē.
Protege dñe Deus.
pplm tuū t apl̄os
tuos petri et pauli et alios

aplor tuor patrocinia con
fidente perpetua defentione
conferua. Alia oratio
mis sancti tui qs
dne nos obnixe leti
ficent et adiuuent ut dñi
eor merita recolimus pa
trocinia sentiamus. Et
pacem tuã nostris concede
temporibz et ab ecclesia tua
cunctam repelle nequitiã.
ter actus et voluntates no
stras et omnium famulor
tuor in salutis tue pros
peritate dispone benefactonbz
nostris sempiterna bona re

tribuc et omnibz fidelibus
defunctis requiem eternam
concedc. Per dñm nostrum
ihñm xpm.

Ad pzam.

cus ut adiutor
tum meū mtēd
ne ad adiu
tandum nie

festina.

Gloria patri. Hymnus

Memento salutis auctor quõ nostri quondam corporis ex illibata virginis nascẽdo formam sumpseris

Mater mater gñe mater nue tu nos ab hoste protege et hora mortis suscipe.

Gloria tibi dñe qui natus es de virgine cũ patre ꝯ sp̃u in sempiterna sc̃la. Amen. ℟ Assumpta est. ℣

Deus in nomine tuo salvũ me fac et in vir

tute tua uidica me
Deus exaudi oronem me
am auribz percape verba oris
mei
Im alieni insurrexerunt
aduersū me et fortes quesie
runt aiam meā et non pro
posuerunt deum ante con
spectū suum
Ece enī deus adiuuat me
et dns susceptor est aīe mee.
Auerte mala inimicis me
is tu in veritate tua disperde illos.
Oluntarie sacrificabo ti
bi et confitebor nōi tuo qm
bonum est

Qui ex omni tribulatione
eripuisti nos et super inimi
cos nostros despexit oculus meus.
Benedixisti dñe
terrā tuā auertisti
captiuitatē iacob.
Remisisti iniquitatē ple
bis tue operuisti omnia pec
cata eorum.
Mitigasti omnē iram tuā
auertisti ab ira indignationis tue.
Conuerte nos ds salutaris
noꝛ et auerte iram tuā a nobis.
Ne quid in eternū irasca
ris nobis aut extendes manū
tuā a generatiōe in generationē.

Deus tu conuertens uiui
ficabis nos et plebs tua leta
bitur in te
Ostende nobis dñe miam
tuã et salutare tuũ da nobis.
Audiam quid loquatur i
me dñs deus meus qm loqtur
pacẽ in plebẽ suam.
Et super sanctos suos et in eos
qui conuertuntur ad cor.
Verumtamen prope timen
tes eum salutare ejus ut in
habitet gla in terra nra.
Mia et veritas obuiauerunt
sibi iustitia et pax osculate sũt.
Veritas de terra orta est et iu

ſtitia de celo prospexit.

Etenim dñs dabit benignitatem
et terra nra dabit fructum suum.
Justitia ante eum ambulabit
et ponet in via gressus suos.

Gloria pri. Psalmus xcvi.

Laudate dnm oēs gētes
laudate eum oēs populi.
Quoniam confirmata est super
nos mia eius et veritas dni
manet in eternum.

Gloria patri. Ad Elisabeth. Completa est
maria in celum gaudet angelis et col
laudantes benedicant dnm qm.

Que est ista que progre
ditur quasi aurora

conlucens pulcra ut luna
electa ut sol terribilis ut ca
stroꝝ acies ordinata. Deo gras.
℟. Dignare me laudare te virgo
sacrata. da mihi virtutem contra
hostes tuos. ℣. Ave Maria. Oze?

Deus qui virginalem
aulam beate marie
in qua habitare eligere dig
natus es da qs ut tua nos
defentione munitos iocundos
fue faciat interesse commme
moratioꝝ. Qui vivis. De
oibz scis ait Sci dei os intercedẽ
dignemur pro nra oiumq salute.
℣. Letamini in dño. Et ghã. Oze?

Exaudi nos Oratio.
Deus salutaris noster
et aplor tuor petri t pauli t
alior apostolor nos tuar pc
fidys quor donasti fideles
esse doctrinus. Alia oratio.
Omnes sancti tui que
sumus dñe. vts.

Ad tertiam.

Deus in adiutorium meum intende.
Dne ad adiuuandum me festina.

Gloria patri. Hymnus
Memento salutis. vts. ℟
Maria virgo. Psalmus dd
Ad dnm cum tribu
larer clamau t ex
audiuit me.
Dne libera aiam meā a la
bys nequus t a lingua dolosa.
Quid detur tibi aut quid
apponatur tibi ad linguā dolosā.
Sagitte potentis acute cū
carbonibz desolatoryis.
Heu mihi quia incolatꝰ
meus prolongatus ē hitau
cū habitantibz cedar multū
incola fuit aia mea.

Cum hys qui odierunt pa
cem eram pacificus cū loquebar
illis ipugnabāt me gratis.
Gloria patri. psalmus
Leuaui oculos meos
in montes vnde ve
niat auxilium michi.
Auxilium meū a dño qui
fecit celū et terrā
Non det in cōmotionē pedē
tuū neqz dormiet q̄ custodit te.
Ecce nō dormitabit neqz
dormiet qui custodit israel.
Dns custodit te dns protectio
tua super manū dexteram tuā.
Per diē sol non vret te neqz

luna per noctem.

Dns custodit te ab oi ma
lo custodiat aiam tuā dns.
Dns custodiat introitū
tuum et exitum tuū ex hoc
nunc et vsq; in scm. ps dd

Letatus sū in hys q
dicta sūt mihi in
domū dnī ibimus

Stantes erant pedes nri i
atrys tuis hyrlm

Hyrlm q edificatur ut ciu
tas cuius participatio eius
in idipsum

Illuc enī ascenderūt tribꝫ
tribꝫ dnī testimoniū isrl' ad

confitendū nōi domine.
Quia illic sederunt sedes
iudicio sedes sup domū dauid.
Rogate que ad pacē sunt
ihrlm̄ et habundācia diligētibz te.
Fiat pax in virtute tua et
habūdancia in turribz tuis.
Propter fratres meos et p
ximos meos loquebar pacem
de te.
Propter domū dñi dei nri
quesiui bona tibi
Gloria p̄i. ℟ Maria virgo assumpta
ē ad ethereū thalamū in quo rex regū
Stellato sedet solio. Cpm
Et hic i hymn formata sū

et ī cuitate sāctificata simulater
reqeau et in ihm̄ potestā mea.
Deo g̃. ℣ Diffusa ē gr̃a ī labr̃s tuis.
℟ Propterea bñdixit te ds̄ meternū
Kyrie. Xpe. Kyrie. Oratio. Oro

Deus q̃ salutis etne bt̃e
marie virginitate fe
cūda hūano generi pmia pdi
disti tribue qs ut qam̄ p nob̄
intercedere sētiamus p q̃ meritu
mr̄ auctorē vite sumapē. ihm̄
xp̄m dnm̄. de oīb̄ scīs ꝯa dei
os intercede. ℣ Letamini. Orem̄. Oro

Concede dne pplm̄. vtr̄. Oro
mns ta tui qs. vtr̄.
Ad sextam



eus in adiutoriū
meum intende.
Dñe ad adiu
uandū me festina

Gloria patri. Hymnus
Memento salutis. vtis. ps
Ad te leuaui oculos meos
qui habitas in celis.
Ecce sicut oculi seruor in
manibz dnor suor.
Sicut oculi ancille in ma
nibus dne sue ita oculi nri
ad dnm deum nostrum donec
misereatur nostri.
Miserere nostri dne misere
re nostri quia multu repleti
sumus despectione.
Quia multu repleta est
anima nra opprobriu habu
deridentibz et despectio superbis.

Gloria pr̄i. Psalmus dd.

Nisi quia dns erat in
nobis dicat nūc isr̄l
nisi quia dns erat ī nobis
cum exurgerent hoīes in
nos forte vivos deglutissent nos
cum irasceretur furor eor̄
in nos forsitan aqua absor
buisset nos
Anima nr̄a pertransiuit aia
nostra forsitan pertransisset
aia nra aquā intolerabile
Benedictus dns qui non
dedit nos in captionem den
tibz eor̄um
Ania nostra sicut passer eripp

ta est de laqueo venantium.
Laqueus contractus est et
nos liberati sumus
Adiutorium nostrum in nomi
ne dñi qui fecit cœlum et terram.
Qui confidunt ꝑ
in dño sicut mons
syon non commouebitur in
æternum qui habitat in ihlm.
Montes in circuitu eius
dns in circuitu populi sui
ex hoc nunc et vsqz in sclm.
Quia non relinquet dns
virgam peccatorum super sortem iusto
rum et non extendant iusti ad
iniquitatem manus suas.

Gene fac dñe bonis et rec
tis corde.
Declinantes autē in obli
gationes adducet dñs cum
operantibz iniquitatē pax
sup̄ israel.
Gloria patri. ℟. In odorem
unguentorz tuorz curremus ado
lescentule dilexerūt te nimis. ℣
Et radicatu in pplo
honorificato et in
partes dei mei hereditas illi⁹
et in plenitudine scorz deten
tio mea. Deo grās. ℣ Bene
dicta tu in mulieribz. ℟ Et bene
dictus fructus ventris tui. Ore⁹. ℣o

Concede nulcrum dñs
fragilitatē nrē p̄sidi
diū ut qui scē dei genitricis
memoriā agimus intercessi
onibꝫ resurgamus. p̄ xp̄m
De oībꝫ scīs. añ. Sā dei omnis.
℣. Letamini in dño. Orem. Oro
Exaudi nos deus salutaris
ris noster. Alia Oratio.
Omnes sancti tui qs̄ do
nunc. ois.

## Ad nonam.



eus in adiutoriū
meum intende
Dñe ad adiu
uandū me festina

Gloria patri. Hymnus
Memento salutis. vts. ℟
Pulcra es t decora. Psalmus.
In conuertendo dns
captiuitatē syon facti
sumus sicut consolati.
Tunc repletū est gaudio
os nostrū et lingua nostra
in exultatione
Tunc dicent inter gentes
magnificauit dns facē cū eis.
Magnificauit dns facē no
biscū facti sumus letantes.
Conuerte dne captiuitatem nostram sicut torrens
in austro.

Qui seminant in lacrimas
in exultatione metent.
Euntes ibant et flebant
mittentes semina sua.
Venientes autē venient cū
exultatione portantes manipulos suos.
Nisi dns edificauerit
domū in vanū laborauerunt q̄ edificant eam.
Nisi dns custodierit ciuitatē frustra vigilat qui custodit eam.
Vanū est vobis ante lucē
surgere surgite postq̄ sederitis
qui manducatis panē dolorus

Cum dederit dilectis suis
somnum ecce hereditas dñi fi
lij merces fructus ventris.
Sicut sagitte in manu po
tentis ita filij excussor.
Beatus vir qui implebit des
iderium suum ex ipis non confu
detur cũ loquetur inimicis
suis in porta
Gloria patri. psalmus xv.
Beati omnes qui timent
dñm qui ambulant
in vijs eius
Labores manuũ tuarũ
quia manducabis bts es et
bene tibi erit

Uxor tua sicut vitis habun
dans in lateribus domus tue.
Filij tui sicut nouelle oliuar
um circuit mensam tuam
Ecce sic benedicetur homo q̃
timet dñm
Benedicat tibi dñs ex syon
et videas bona hierlm omnibus
diebus vite tue.
Et videas filios filiorum tuorum
pacem super israel
Gloria p̃i. ☩ Sepulcra es + duxa filia
thebin terribilis ut castrorum acies ordinata
In platteis sicut cynamomum et balla
mum aromatizans odorem dedi

qī mūra electa dēdi suauitatem
ōnis. Dō gr. ℣ Post partū. ℟ Deo ge
ratiaꝝ. Kyrie. x pe'. Kyrie. Oze. Oro

Famulōꝝ tuoꝝ qs dne
delictis ignosce ut qui
tibi placere de actibꝫ nr̄is nō ua
lemus genitricis filij tui dn̄i
nr̄i intercessione saluemur. per.
ℵ. Sā dei ōs. ℣ Letamini. Oze. Oro

Protecta qs ops deus ut
nullis nos permittas
pturbationibꝫ cōcuti quos u
apl̄ice cōfessionis petra solidasti.
Omnis sa tua qs dne. vtz.

Ad vesperas.


eus m adiutoriu
meū intende
Dñe ad adiuuā
dū me festina

Gloria pñ. ℣. Cū eēt rex.

Dixit dñs dño meo se
de a dextris meis.

Donec ponā inimicos tuos
scabellū pedū tuor.

Virgā virtutis tue emittet
dñs ex syon dñare in medio
inimicor tuor.

Tecū principiū in die virtu
tis tue in splendoribz sanctor
ex utero ante luciferū genui te.

Juravit dñs et non pen
tebit eum tu es sacerdos eter
nū scdm ordinē melchisedech.

Dñs a dextris tuis cōfregit
in die ire sue reges

Iudicabit in nationibz ꝯ
plebit ruinas conquassabit ca
pita in terra multoz.
De torrente in via bibit pp
terea exaltabit caput.
Glia ꝑri. añ Cum esset rex in a
cubitu suo nardus mea dedit odorē
suauitatis. añ Leua eius ꝑs dō.
Laudate pueri dnm laū
date nomen dñi.
Sit nomen dñi benedictū ex
hoc nunc et vsqz in sēcm.
A solis ortu vsqz ad occasū
laudabile nomen dñi.
Excelsus sup oēs gētes dns
et sup celos gloria eius.

Quis sicut dñs deus noster
qui in altis habitat et humilia
respicit in celo et in terra.
Suscitans a terra inopē
et de stercore erigens pauperem.
Ut collocet eum cū principibz
pibz cū principibz ppli sui.
Qui habitare facit sterilē
in domo matrē filiorz letantē.
Gloria pri. ℟. Leua eius sub ca
pite meo et dextera illius amplexa
bitur me. ℟ Nigra sū. ps dō.
Beatus sū in hys vbs.
℟ Nigra sū sed formosa filie ihrlm
ideo dilexit me rex introduxit me
in cubiculū suū. ℟ Ysa hymnus.

Ili dñs edificauerit. vts.

℟. Jam hyemps trāsijt ymber a
bijt et recessit surge amica mea et
veni. ℟. Speciosa. plalmus.

Lauda ihrlm dñm lau
da deū tuū syon.

Qm confortauit seras por
tax tuax benedixit filijs tu
is in te.

Qui posuit fines tuos pace
et adipe frumenti saciet te.

Qui emittit eloquiū suū
terre velociter curritsermo eius.

Qui dat nīe sicut lanā
nebulā sicut cinerē spargit

Mittit crystallū suum sicut

vitellas ante faciē turgoris ei
quis sustinebit.

Emittet verbū suū et liq
faciet ea flabit spūs eius et flu
ent aque.

Qui annūciat verbū suū
iacob iustitias et iudicia
sua israel.

Non fecit taliter oī nationi
et iudicia sua nō manifesta
uit eis.

Gloria pri. ℟ Speciosa facta es et
suauis in deliciis tuis sca dei genitrix.

Hymnus et ant̄ Cpm̄
secula creata sum et
usq; ad futurū sclm̄ non de

sina ct in hitatione sca coza
ipo manifestatu. O. q. hymn

Aue maris stella dei
mater alma atq; se
per virgo felix cli porta
Sumens illud ave gabri
elis ore fundia nos i pace mu
tans nomen eue.
Solue vincla reis profer lu
men cecis mala nra pelle
bona cuncta posce.
Monstra te esse matre su
mat per te preces q pro nobis
natus tulit esse tuus.
Virgo singularis inter o
mnes mites nos culpis solutos mi

tes fac castos.

Quitā pīcta puerā iter para
tutū ut videntes ihm̄ sem
per collectemur.

Sit laus deo pī summo
xpo decus spīritui scō trinus
honor unus. Antex. ℣. Dul
cis est gra in labijs tuis. ℟ Prop
terea benedixit te ds in eternū. ad
Beata mater. ps dd.

Magnificat aīa mea
dnm.

Et exultauit sps meus i
deo salutari meo

Quia respexit humilitatem
ancille sue ecce enī ex hoc bea

tã me dicent oẽs generationes.
Quia fecit mihi magna
qui potens est et sanctũ no
men eius
Et mia eius a progenie ī
progenies timentibz eum.
Fecit potentiã in brachio
suo dispersit superbos mẽte
cordis sui
Deposuit potentes de sede
et exaltauit humiles.
Esurientes ipleuit bonis
et diuites dimisit inanes.
Suscepit isrl puerũ suũ
recordatus est mie sue.
Sicut locutus ē ad pres

nos abyaham et semini eius
in secula

lia pi. ℟. Beata mater et
virgo gloriosa regina mundi
intercede pro nobis ad dnm. Kyrie.

onserua nos domine
los tuos qs dne ds perpe
tua mentis et corporis sanitate
gaude et gliosa bte marie sep
virginis intercessione a presenti
liberari tristitia et eterna per
frui letitia. Xpm. ant Sana dne os
b. letamur in dno. Ore. Oro.

rotege dne ppli tui. Oro
nis sa tui qs dne. vt
Ad completorium.



Oniuate nos deus
salutaris noster.
Et auate uā tu
am a nobis

Deus in adiutorium meū
intende.
Domine ad adiuuandū
me festina
Gloria patri psalmus.
Sepe expugnauerunt
me a iuuentute mea
dicat nunc israel
Sepe expugnauerunt me
a iuuentute mea etenim nō
potuerunt michi.
Supra dorsū meū fabrica
uerunt peccatores prolongauerūt
iniquitatē suam.
Dns iustus concidet cervices
peccatorū confundantur et conuer

tantur rectoꝛium omꝭs qui
discrunt ſpon
Eiant ſicut fenū tectoꝛū
quod pꝛiuſquā euellatur
exaꝛuit
De quo non ꝛpleuit ma
num ſuam qui metet t li
gā ſuū ſ manipulos colligęt.
Et nō dixerunt qui pꝛeteꝛi
bant benedictio dñi ſuper vos
benedicimus vobis in noīa
ne domini.
Gloꝛia patri. ꝑs dauid.
De pꝛofundis da. vtś. ꝑs.
Dñe non eſt exaltatū
coꝛ meū neq; elati

sunt oculi mei.

Deq; ambulauit in magnis
neq; in mirabilibus super me.
Si non humiliter sentiebā sed
exaltauit animam meā
Sicut ablactatus est super
matre sua ita retributio in
anima mea
Speret isrl in dño ex hoc nūc
et vsq; in sclm

Gloria patri. hymnus.

Ecuento salutis auctori. vtš.
go mater pulcre pūm
dilectionis et timoris
et magnitudinis et scē spi.
Deo grās. ℣. Ora pro nobis scā dei

genitrix

genitrix. ℟. Ut digni. ℣. Sub tuū. ℘s

Nunc dimittis seruum
tuum dñe secundū verbū
tuum in pace.

Quia viderunt oculi mei
salutare tuum

Quod parasti ante faciem
omnī populoꝝ.

Lumen ad revelationē gē
tiū et gloriā plebis tue israel.

Gloria patri. ℣. Sub tuū pre
sidiū confugimus scā dei genitrix
deprecationes ne despicias in necessi
tatibꝫ sed a periculis libera nos semp
virgo benedicta. Kyrieleison. Xpe eleison. Kyrieleison.
Pater noster. et ne nos. Sed ℟ Ora

Cate et gloriose semp
virginis marie qs
dñe intercessio gliosa nos
protegat et ad vitā eternam
perducat. Per xpm. antph.
Sancti dei oēs. ℣ Letamini. Oze. ORD
Exaudi nos deus salutā
ris noster. Alia oratio.
Omnis cā tua qs dñe.

Incipiunt hore cōe cruas.

Domine labia mea aperies
et os meum annuntiabit

laudem tuam.

Deus in adiutorium meū intende.

Domine ad adiuuandū me festina

Gloria patri. hymnus.

Deus sapia veritas diuina. Deus homo captus est hora matutina. Suus discipulus a suo derelictus. Nudus deus venditus traditus et afflictus. ℟. Adoramus te xpe et benedicimus tibi quia per sanctā crucē tuā redemisti mundū. ℣ Omnis terra adoret te deus et psallat tibi. ℟ Psalmū dicat nomini tuo. Ore

Dñe ihū xp̄e fili dei
vivi pone passionem
aiaē et morte tuā inter iudi
cū tuū et aīam meā nunc
et in hora mortis mee et semp
largire digneris vivis mīam
et gr̄am defunctis veniam et
requiē eccl̄iē tue pacē et cōcor
diam et nobis pc̄oribz vitam
et letic̄iā sempiternā. Q̄ vivis.

Eus in adiuto. Ad p̄ma
cū mcū. vbs. Hymnus.

Hora p̄ma ductus est
ihs ad pylatū. stallis
testimoniis multū accusatus.
In collo percutiunt manibz

ligatū. Vultū dei conspuit
lumen cēli gratū. ℟. Adoramus
te xpe. ℣ Qui sedes terra. Ore. Oratio
Dne ihū xpe. qui. Ad tua
eus m aduentū. Hyr
ucalige damutant
hora tertia. Illusus
uidutus veste purpurea.
Caput eius spinea coronā
spinea. Crucē portas humē
us ad locū penā. ℟. Adoramus
te xpe. ℣ Qui sedes terra. Ore. Oratio
Dne ihū xpe. qui Ad sexta.
eus m aduentū. hyr
ora sexta ihs est cru
a crucifixus. Et est

aum latronubꝫ pendes deputa
tus. Pre tormentis fatiens fel
le saturatus. ℟ Adoram⁹ te xpe.
℣ Omnis terra. Ore⁹. Oratio
Hone ihu xpe. vtꝫ. Ad nona.
Deus i adiutoriu. hymn⁹
Hora nona dns ihs expi
rauit. Ihely damas animam
pri cōmendauit. Latus ei⁹ lancea
mules pforauit. Terra tuc tremu
it t sol obscuratus. ℟ Adora⁹ te.
℣ Hic ihu xpe. vtꝫ. Ad vꝫ.
Deus i adiutoriu. hymn⁹
De cruce deponitur hora
vespertina. Sepultudo
latuit i mente diuina. Tale

mo⁊tẽ ſubiyt vite mediana. ℣eu
co⁊ona gl̃ie ꝛacaut ſpuia ℟. Ado
ramus te xp̃e. ℣ Ois terra. Oꝛes. Oꝛa
Oñe ih̃u xp̃e. vts. Ad ꝓplet
onuerte nos deus sa
lutaris noster.
Et auerte ꝛam tuã a nobis.
eus in adiutoriũ. Hyp 2
ora cõpletory datur le
pultare. Corpus xpi
nobile ſpes vite future. Con
ditur aromate complentur
ſcripture. Jugis ſit memo
ria mors hec nuchi aure. ℟
Adoram⁹ te xp̃e. ℣ Ois terra. ora
Oñe ih̃u xp̃e. vts. ꝯcõmẽd⁹

Tas horas canonicas cū
deuotione. Tibi xpe ihu
rendo pia cationē. Vt qui pro
me passus es amoris ardore.
Sis michi solacium in mortis
agone. ℟ Adoramꝰ te xpe. Qui
Dne ihū xpe. vts

## De sancto spiritu.


omine labia mo
a aperies
t os meum
annuncabit

laudem tuam.

Deus in adiutorium
meum intende.
Dne ad adiuuandu me
festina

Gloria patri. Hymnus

Deus sancti spūs gracia
sit data. de qua virgo
virginū fuit obumbrata. Cu
per sanctū angelū fuit sa
lutata. verbū caro fcm̄ est
virgo feminea. ℟ Veni sc̄e
spūs repple tuoꝝ corda fideliū et tui
amoris in eis ignē accende. ℣ Emit
te spūm tuū et creabuntur. ℟ Et re
nouabis faciē terre. Oremꝰ. Oꝝo.

Omps sempiterne deus
da nobis illã sã xpi
gram quã discipulis tuis i
die scõ pentecostes tradidi
sti. Qui vivis. Ad primam
Deus in adiutoriũ. hyꝫ.
e maria virgine xpus
fuit natus. Crucifixus
mortuus atq; tumulatus. Re
surgens discipulis suis demon
stratus. Et ipis cernentibz celis
ascendit. Amen scõe xpe. Orꝫ Ora
Omps sempiterne. Ad tertiã
Deus in adiutoriũ. hymꝫ
Spiritum sanctum xpm deus
delegauit. In die scõ

pentheccostes ipos confirmauit.
Atq; linguis igneas ipos in
flammauit. Relinquere orpha
nos eos deneg;auit. ℟. Veni cre.
Omps septiforme. Ad sexta
cus in aduitoriu. hyp
Prius paracletus fuit
appellatus. Omni de
caritas fos diuulgatus. Spi
ritalis vnctio ignis mira
matus. Septiformis gra ca
ritima blis. ℟ Veni cre cps. Ono
Omps septiforme. Ad nona
cus i aduitoriu. hymn
Septiforma gram tuic
acceptauerunt. Quare

jdiomata cuncta cognouerit
Ad diuersa climata mundi
transtulerit. Et fidē catholicā
tunc predicauerit. ℟ Veni
cte sps. ℣ Et emitte. Oremꝰ Omn̄
ipotens sempiterne. Ad vs
eus tu aduitouit. hꝰ
extre dei digitus vir
tus spūalis. Nos def
endat et eruat ab oīb⁹ ma
lis. Vt nobis nō noceat dem̄
nibus. Sed protegat tu
tuat foueat sub alis. ℟ Veni
cte sps. ℣ Et emitte spm. Oratio
Sps sempiterne. Ad cōplet.
Conuerte nos deus. vtⁿ.

Deus in adiutorium. Hymn
Spūs paracliti nos
velit uiuare. Gratius
nōīs regere et illuiare. Vt cū
deus veneris iūdicare. Nos
velit ad dexteram suā apellare.
℟. Veni sce spūs. ℣ Emitte. Ora.
Omnipotens sempiterne. recōmendo.
Has horas canonicas
cū deuotione. Tibi sce
spūs pria ratione. Dixi ut nos
visites inspiratione. Vt uuia
mus uigiter celi regione. ℟
Veni sce spūs. ℣ Emitte. Ora.
Omnipotens sempiterne deus.

Sequuntur septem psalmi
penitentiales.



Domine ne in fu
rore tuo argu
as me neq3 in
ira tua comp

as me.

Miserere mea dñe qñ infirmus sū sana me dñe qñ conturbata sūt ossa mea.
Et aīa mea turbata ē nimis sed tu dñe usqz quo.
Convertere dñe et eripe aīam meā salvū me fac propter miām tuam.
Qm̄ non est in morte q memor sit tui in inferno
autē quis confitebitur tibi.
Laboravi in gemitu meo lavabo per singulas noctes lectum meū lacrimis meis stratū meum rigabo.

Turbatus est a furore oculus meus inveteravi inter omnes inimicos meos.

Discedite a me omnes qui operamini iniquitatem quoniam exaudivit dns vocem fletus mei

Exaudivit dns deprecationem meam dns orationem meam suscepit.

Erubescant et conturbentur vehementer omnes inimici mei convertantur et erubescant valde velociter. ps.

Beati quorum remisse sunt iniquitates et

quor tecta sunt peccata.

Beatus vir cui non imputa
uit dns peccatū nec est in spi
ritu eius dolus.

Quōm tacui inueterauerunt
ossa mea dum clamarem
tota die.

Quōm die ac nocte grauata
est super me manus tua cō
uersus sū in erūpna mea
dū configitur spina.

Delictum meum cognitū
tibi feci et mustiaā meam
non abscondi

Dixi confitebor aduersū
me mustiaam meā dño

et tu consilia impietatem
peccati mei
Deo hac orabit ad te omis
sais in tempore opportuno.
Cumptamen in diluuio
aquar multar ad eum non
approximabunt
Tu es refugium meum a
tribulatione que circumdedit
me exultacio mea erue me
a circumdantibs me.
Intellectu tibi dabo et in
struam te in via ac qua gra
dieris firmabo super te ocu
los meos.
Nolite fieri sicut equus et

malus quibz non est mtel
lectus
In dyamo et freno maxil
las eoz constringe qui non
approximant ad te
Multa flagella peccatoris
sperantem autē in dño mia
circundabit.
Letamini in dño et exul
tate iusti et gloriamini oēs
recti corde.
Gloria patri. psalmus.
Domine ne in furore
tuo arguas me neq;
in ira tua corripias me.
Quoniam sagitte tue infixe sūt

mich et confirmasti super
me manū tuam
Non est sanitas in carne
mea a facie ire tue non est
pax ossibz meis a facie peccā
torum meoz
Quoniam iniquitates mee su
pergresse sunt caput meū
et sicut onus graue grauā
te sunt super me.
Putruerunt et corrupte
sunt cicatrices mee a facie
insipientie mee.
Miser factus sū et curua
tus sum usqz in finē tota
die contristatus ingrediebar.

Quñ lumbi mei ꝯpleti sūt
illusionibꝫ et non ē sanitas
in carne mea
Afflictus sum ⁊ hūliatus
sum nimis rugiebā a gemi
tu cordis mei
Dñe ante te oē desiderium
meū et gemitus meus a te
nō est abscondit⁹
Cor meū conturbatum est
derelinquit me virtus mea et
lumen oculor meor et ipm
non est mecū
Amica mea et proximi mei
aduersū me appropinquaue
runt et steterunt

Et qui uicta me eaant de
longe steterunt et uim face
bant qui quercbant aiam
meam
Et qui inquercbant mala
mihi locuti sunt uanitates
et dolos tota die meditabãtur.
Ego autem tanq̃ surdus
non audiebã et sicut mutus
non aperiens os suum.
Et factus sum sicut homo
non audiens et non habens
in ore suo redargutiones.
Qm̃ in te dñe speraui tu
exaudies me dñe de meus.
Quia dixi ne qñ supgaui

deaut michi nimica mea t
dium cõmouentur pedes
mea super me magna lo
cuti sunt
Ego in flagella pa
ratus sum et dolor meus
in conspectu tuo semper.
Quã iniquitatẽ meã an
nunciabo et cogitabo pro
peccato meo.
Inimici autẽ mei vi
uunt et confirmati sunt
super me et multiplicati
sunt qui oderũt me inq̃.
Qui retribuunt mala
pro bonis detrahebãt mihi

qm̃ sequebar bonitatē.

De derelinquas me dñe
deus meus ne discesseris
a me.

Intende in adiutoriū
meū dñe deus salutis mee.
Gloria patri. ps dauid.

Miserere mei deus se
cundum magnā
miam tuam.

Et secundū multitudi
nem miserationū tuarū de
le iniquitatē meā

Amplius laua me ab
iniquitate mea et a pcō
meo munda me.

Quñ iniquitatem meam
ego cognoscã et peccatũ meũ
contra me est semper.
Tibi soli peccaui et malũ
coram te feci ut iustificeris
in sermonibꝫ tuis et uincas
cum iudicaris
Ecce enĩ in iniquitatibus
conceptus sum et in peccatis cõ
cepit me mater mea.
Ecce enĩ ueritatẽ dilexisti
incerta et occulta sapientiae tuae
manifestasti mihi.
Asperges me dñe ysopo
et mundabor lauabis me et
super niuẽ dealbabor.

Auditu meo dabis gaudi
um et letiaã et exultabunt
ossa hũiliata
Auerte faciẽ tuam a pcis
meis et oĩs miq̃tates meas dele.
Cor mundũ crea in me
deus et spũm rectũ innova
in visceribz meis
Ne proiciaas me a facie tua
et spũm sanctũ tuum ne aufe
ras a me
Redde mihi letiaã salu
taris tui et spũ pncipali cõ
firma me.
Docebo iniquos vias tuas
et impij ad te cõuertentur.

Liberā me de sanguinib⁹
deus deus salutis mee et ex
ultabit lingua mea iusti
ciam tuam
Dñe labia mea aperies
et os meū annunciabit
laudem tuā
Qm si voluisses sacrifi
cium dedissē utiq⁹ holocau
stis non delectaberis.
Sacrificiū deo spūs con
tribulatus cor contritū t
humiliatū ds nō despicies.
Benigne fac dñe in bo
na voluntate tua syon ut
edificentur muri ihrlm.

Tunc acceptabis sacrifi
cium iustitiae oblationes et
holocaustа tunc ponent
super altare tuū vitulos.
Gloria patri. ps dauid.
Exaudi oronem
meā et clamor me
us ad te veniat
Non auertas faciē tuā
a me in quacūq; die tribu
lor inclina a me aurē tuā.
In quacūq; die invoca
uero te velociter exaudi me.
Quia defecerunt sicut fu
mus dies mei et ossa mea
sicut cremiū aruerunt.

Peccatus tuum ut fenū et
aruit cor meum q̃a oblitus
sū comedere panem meū.
A voce gemitus mei adhe
sit os meū carni mee.
Similis factus sū pellica
no solitudinis et factus sū sicut
nicticorax in domicilio.
Vigilauu et factus sum sicut
passer solitarius in tecto.
Tota die exprobrabant mi
nimici mei et qui laudā
bant me adūersum me
iurabant.
Quia cinerē tanq̃ panē
manducabā et potū meū

ium fletu misceā.

Ne facias me indignationis
tue quia eleuans allisisti me.
Dies mei sicut umbra de
clinauerunt et ego sicut fe
num arui

Tu autē dne in eternum
permanes et memoriale tu
um in generatione et gene
rationem

Tu exurgens dne misere
beris sion quia tēpus mise
reri eius quia uenit tps.
Quōm placuerunt seruis tu
is lapides eius et terre eius
miserebuntur

Et timebunt gentes no
men tuū dñe et oēs reges ter
re gloriā tuam
Quia edificauit dñs syon
et videbitur in gliā sua.
Respexit in oratiōē hu
miliū et non sprevit pre
cem eorum.
Scribentur hec in genera
tione altera et pplūs qui creā
bitur laudabit dnm.
Quia prospexit de excelso
scō suo dñs de celo in terrā
aspexit
Ut audiret gemitus com
peditor ut solueret filios mte

remptorum

Et annūciaant in syon no
men dñi et laudem eius in
hierusalem

In conueniendo pplōs i
vnū et reges ut seruiāt dño.

Respondit ei in via virtu
tis sue paucitatē dierū meoꝝ
nuncia mihi

Ne revoces me in dimidio
dierū meoꝝ in generatione et
generationē anni tui

Quia tu dñe terrā fun
dasti et opera manuū tuaꝝ
sunt cēli

Ipsi perībunt tu autem

permanes et os̄ sicut vestimen
tū veterascent.
Et sicut operto tū muta
bis eos t mutabuntur tu au
tem idem ipe es et anni tui
non deficient.
Filij seruor tuor habitabit
et semen eor in sc̄m dirigetur.
Gloria patri. psalmus.
De profundis clamau
ad te domine dne de
audi vocē meam
Fiant aures tue intenden
tes in vocē deprecationis mee.
Si iniquitates obseruaue
ris dne dne qs sustinebit.

Qua apud te propiciatio
est et propter legē tuā iusti
fica me domine.

Sustinuit aīa mea i ver
bo eius speravit aīa mea in dño.

A custodia matutina usq;
ad noctē speret isrl' in dño.

Qua apud dñm mia et
copiosa apud eū redēptio.

Et ipe redimet isrl' ex oib;
iniquitatibz eius

Gloria patri. pē dauid.

Domine exaudi oratio
nē meā auribz per
cipe obsecrationē meā in veri
tate tua exaudi me in tua

iustica a.

Et non intres in iudicũ
cum seruo tuo dñe quia nõ
iustificabitur in conspectu
tuo oĩs viuens.

Quia persecutus est inimi
cus aiam meã humiliauit i
terra vitã meam.

Collocauit me in obscuris
sicut mortuos seculi et anxi
atus est super me spũs meus
in me turbatus est cor meũ.

Memor fui dies antiquos
meditatus sũ in oibz operi
bus tuis et in factis manuũ
tuarz meditabar

Expandi manus meas ad
te aīa mea sicut terra sine
aqua tibi
Velociter exaudi me dñe
defecit spūs meus
Non auertas faciē tuā a
me et similis ero descenden
tibus in lacum
Auditā fac mihi mane
miam tuā qa i te speraui.
Notā fac mihi viam in
qua ābulam quia ad te le
uauī aiam meā
Eripe me de inimicis meis
dñe ad te confugi doce me
facere voluntatem tuā qa

deus meus es tu.

Spūs tuus bonus deducet
me in terrā rectā propter no
men tuū dñe vuuificabis
me in equitate tua

Educes de tribulatione a
nimā meā et in misericordiā tua
disperdes ēs inimicos meos.

Et perdes oēs qui tribulāt
animā meā quoniā ego ser
uus tuus sum

Gloria patri. Letania.

Kyrieleyson
Xpisteleyson.
Xpiste audi nos
Xpiste exaudi nos.

Pater de celis deus. Miserere nobis
Fili redemptor mundi deus. Miserere nobis
Spūs sancte deus. Miserere.
Scā trinitas unus dē. Miserere.
Sancta maria or
Scā dei genitrix or
Scā virgo virginū or
Sancte michael or
Sancte gabriel or
Sancte raphael or
Omnes sancti angeli et archangeli dei or.
Scē ioānes baptista or
Scī patriarche t pphē. or.

Sancte petre. or
Sancte paule. or
Sancte andrea. or
Sancte iohes. or
Sancte philippe. or
Sancte bartholomee. or
Sancte iacobe. or
Sancte mathia. or
Sancte barnaba. or
Sancte symon. or
Sancte iuda or
Sancte luca or
Sancte marce or
Omnes sancti apli et eu
angeliste dei or
Sancte stephane. or

Sancte lucie oz
Sancte agate oz
Sancte clemens oz
Sancte laurenti oz
Sancte vincenti oz
Sancte sebastiane oz
Sancte cosma oz
Sancte damiane oz
Sancte gervasi oz
Sancte ulste oz
Sancte pastor oz
Sancte iuliane oz
Sis sā martires oz$^{ce}$
Sis sā innocentes oz$^{ce}$
Sancte martine oz
Sancte silvester oz

ancte gregor[illegible] or
ancte augustine or
ancte ambrosii or
ancte martialis. or
ancte nicolae or
ancte paule. or
mis ſcā pontificis. or
ancte benedicte. or
ancte hanalde. or
ancte ludouice. or
ancte anthoni or
ancte geraldc or
mncs ſcā cōfessoꝝ. or
ancta maria mag. or
ancta m egyptiaca. or
ancta anna or

Sancta felicitas ℟
Sancta perpetua ℟.
Sancta agatha ℟
Sancta lucia ℟
Sancta barbara ℟
Sancta margarita ℟.
Sancta katherina ℟
Sancta fides ℟.
Sancta spes ℟.
Sancta karitas ℟
Sancta radegũdis ℟
Sancta genouefa ℟
Sancta eugenia ℟
Sancta dana ℟
Sancta petronilla ℟
Sancta columba ℟

Omīs scē virgines. Ora pro nob
Omīs scī et scē dei. Ora pro nob
Ropicius esto. parce no
bis dñe.
Ab omni malo. Libera nos
dñe.
Ab insidijs diaboli. L.
Dāpnatione perpetua. L
Morte subitanea. L.
Ab immundis cogitatoūbz. L.
Fulgure et tēpestate. L.
Periculo mendi. L.
Per misteriū scē incar
nationis tue. L.
Per natiuitatē tuā. L.
Per baptismū tuū. L.

Per appariōnē tuā. ℣.
Per cruce ē mortē tuā. ℣.
Per gloriosam resurrectionē tuam. ℣.
Per admirabilē ascensionem tuā. ℣.
Per gr̄am sc̄i sp̄s pacta. ℣.
In die iudicij. ℣.
In hora mortis. suscurre nobis domine.
Peccatores. Te rogamus audi nos.
Ut pacē nobis dones. Te.
Ut mīa. et pietas tua nos custodiat. Te.
Ut aīas nostras et paren

tum nostrox ab eterna damp
natione eripias. Tx.
Et ecclesiam tuā regere t
defensare digneris. Tx.
Et fructus terre dare t cō
servare digneris. Tx.
Et oībz fidelibz defunctis
vitā eternā dones. Tx.
Et nos exaudire dig. Tx.
Ilu dei. ij. Tx
Agnus dei qui tollis pec
cata mundi pacē nobis dnē.
Agnus dei qui tollis pec
cata mundi. exaudi nos
dnēne.
Agnus dei qui tollis pcā

mundi

mundi dona nobis pacem.

Kyrieleyson
Christeleyson
Kyrieleyson. Pater noster.
Et ne nos. Dñe exaudi oronē meā
Et clamor. Oremus. **Oratio.**

Deus cui proprium
est misereri semper
et parcere suscipe deprecatio
nem nostram ut quos delic
torum catena constringit
miseratio tue pietatis absoluat.

Ideluum **Alia Oro.**
Deus omnium condi
tor et redemptor animabus
famulor famularumq; tuar

remissionē auctor tribue
peccatorum ut indulgen
tiam quam semper optauc
runt pijs supplicationibus
consequentur. Qui vivis et
regnas cū deo pīe in vnitate
spūsancti sēcā deus. per omnia
secula seculoꝝ. Amen.

Sequitur vigilie mortuoꝝ.



ℵ. placebo. ps
ilevi qm exau
diet dns voce
oronis mee.

Qua inclinauit aurem
sua mihi et in diebz meis
inuocabo
Circūdederunt me dolores
mortis et pericula inferni i
uenerunt me
tribulationē et dolorē in
ueni et nomen dñi inuocaui.
O dñe libera aiam meam
misericors dñs et iustus et
deus nr̄ miseretur.
Custodiens paruulos dñs
humiliatus sū et liberauit me.
Conuertere aiam mea in
requiē tuam quia dñs bene
fecit tibi

Quia eripuit aiam meā
de morte oculos meos a lacri
mis pedes meos a lapsu.
Placebo dominio in regio
ne vivorum
Requiē eternā dona eis do
mine.et lux perpetua luceat
eis. aī. Placebo dño in regione
vivor. aī. Heu michi. psalm⁹
Ad dñm cum tribularer
clamavi. vts. aī Heu michi
quia incolatus meus prolongat⁹
est. aī Dñs custodit. ꝑ. David
Levavi oculos meos in
montes. vts. aī. Dñs custodit
te ab oī malo custodiat aiam tuā

dns. ℟. Si miquitates. ℣.
De pfundis da. vts. ℟
Si miquitates obseruaueris dne
dne quis sustinebit. ℟. Qre
ta mamui. ℣ Qñ.
onfitebor tibi dne
in toto corde meo qñ audi
sti oia verba oris mei.
In conspectu angelorum
psallam tibi adorabo ad tem
plum scm tuu et confitebor
nomini tuo.
Super mia tua et verita
te tua qm magnificasti su
per omne nomē scm tuu.
In quacūq; die invoca

uero te exaudi me multiplicabis in aīa mea uirtutē.

Confiteantur tibi dñe oēs reges terre quia audierunt oīa uerba oris tui

Et cantent in uijs dñi quia magna est gl̄ia dñi

Quoniam excelsus dñs et humilia respicit et alta a longe cognoscit.

Si ambulauero in medio tribulationis uiuificabis me et super iram inimicorū meorū extendisti manū tuā et saluum me fecit dextera tua

Dominus retribuet pro me dñe

mīa tua in sclm̄ opera manu
um tuar ne despicias.

Requiem. ar Opera manuū
tuar ne despicias. ℣. Audiui vocē
de celo dicentē mihi. ℟ Scribe be
ati mortui qui in dño moriuntur.
ar̄. Omne qđ dat. Psalmus.

Magnificat aia. vt̄s. ar̄
Omne qđ dat mihi pater a me ve
niet et eū qui venit ad me nō ejiciā
foras. Pater nr̄. Et ne nos. p̄s dō

Laudi aia mea dñm
laudabo deū in vita
mea psallā deo meo quam
diu fuero.

Nolite confidere in principi

bꝫ in filijs hoīm in quibꝫ nō
est salus

Exibit spūs eius et reuertet
tur in terram suā in illa die
peribunt oēs cogitationes eoꝝ.

Beatus cuius ē dñs deus
iacob adiutor eius spes eius
in dño ipius qui fecit cēlū
et terrā mare et oīa que
in eis sunt.

Qui custodit ueritatē in se
culū facit iudiciū iniuriam
patientibꝫ dat escā esurientibꝫ.

Dñs soluit cōpeditos dñs
illuminat cecos

Dñs erigit elisos dñs dili

git uultos.

Dñs custodit aduenas pu
pillum et uidua suscipiet t
vias pccor dispdet.

Regnabit dñs in scla de
deus tuus syon in generatõe
et generatione.

Requiem. A porta inferi.

Kyrie ñe aias eor. Oye.

Deus qui nos patre
et matre honorare
precepisti miserere clementer
aiabz patris et matris mee
eisqz oia peccata dimittre
meqz eos in eterne claritа
tis gaudio fac videre.

Deus venie largitor
et humane salutis a
mator qs tuam clemen
ciam tuā ut nr̄e congrega
tionis fratres soror̄es paren
tes amicos atq; benefactor̄es
nr̄os qui ex hoc sc̄lo transi
erunt beata maria semper
virgine intercedente cum om̄i
bz sanctis tuis ad perpetue bea
titudinis consortiū pervе
nire concedas. Alia oratio

Ideliū deus omniū
conditor et redemptor
animabz famulor famularū
qz tuar̄ remissionē cūctor

tribue pcōz ut indulgentia
am quam semp optauerūt
pgs supplicationibz conse
quantur. Qui vnus.
Mutatoriū. Regem an omnia
uuunt venite adoremus. ps.
Venite exultemus dño
iubilemus. vts. Requiē
ternam dona. ar. Dirige.
Vocem meā ps Dauid
auribz percipe dñe
intelligē clamorē meū.
Intende voci orationis
mee rex meus t dē meus.
Quōm ad te orabo dñe mane
me exaudies vocē meam.

Manē astabo tibi et vide
bo qñ non deus volens mi
quitatem tu es.
Neqz habitabit iuxta te
malignus neqz permane
bunt inuſti añ oculos tuos.
Diſti oēs qui operantur
iniquitatē perdes omnis qui
loquuntur mendaciū.
Virū ſanguinū et dolo
ſum abhominabitur dns
ego aut̄ in multitudine
miē tue
introibo in domū tuā
adorabo ad templū ſanctū
tuū in timore tuo

Dñe deduc me in uiritia
tua propter inimicos meos
dirige in conspectu tuo vi
am meam.
Quñ non est in ore eoꝝ ve
ritas cor eoꝝ vanū est.
Sepulcrū patens est gut
tur eoꝝ linguis suis dolose
agebāt iudica illos deus.
Decidant a cogitationibꝫ
suis secdm multitudinem
impietatū eoꝝ expelle eos quñ
irritauerunt te dñe.
Et letentur omnes qui spe
rant in te ineternū exulta
būt et hñitabis in eis.

Et glorientur in te oēs
qui diligunt nomen tuū
qm̄ tu benedices iusto.
Dñe ut scuto bone uolū
tatis tue coronasti nos.
Requiem. ant̄ Dirige dñe
deus meus in conspectu tuo viam
meā. ℟. Conuertere. ps̄ dō.
Dñe ne in furore tuo ar
guas me neq; in ira tua cor
ripias me Miserere. vts̄.
ant̄ Conuertere dñe et erue ani
mā meā qm̄ non est in morte q̄
memor sūt tui. ℟. Ne quādo. ps̄
Deus deus meus ī te
speraui saluū me

fac ex oñtibz psequentibz
me libera me.

Ne quando rapiat ut leo
aiam meã dum non ẽ qui
redimat neq; q̃ saluũ faciat.

Deus meus si feci
istud si est iniquitas in ma
nibus meis

si reddidi retribuentibz
mihi mala decidã merito
ab inimicis meis manis.

Persequatur inimicus
aiam meã et cõprehendat et
conculcet in terra vitã me
am et gloriã meã in pul
uerem deducat

Exurge dñe in ira tua et
exaltare in finibus inimi
corū tuorū
Et exurge dñe deus me
us in pcepto qđ mandasti
et synagoga populoꝝ tuoꝝ
circundabit te
Et propter hanc in altū
regredere dñs iudicat pplos
Iudica me dñe scdm
iustitiā tuā et scdm inno
centiā meā sup̄ me.
Consumetur nequitia
pcoꝝ et diriges iustū scru
tans corda et renes deus.
Iustū adiutoriū meū a

dñō qui ſaluos facat rectos
corde
Deus iudex iuſtus fortis
et patiens numquid irata
tur per ſingulos dies
Niſi conuerſi fueritis
gladiū ſuū vibrauit arcū
ſuū tetendit et paravit illū.
Et in eo paravit vasa mor
tis ſagittas ſuas ardentibꝰ
effecit
Ecce parturit iniuſticiā
concepit dolore et peperit
iniquitatem
Lacum aperuit et effo
dit eū et incidit in foueam

quam terat
Conuertetur dolor eius i
caput eius et in vertice ipius
iniquitas eius descendet.
Confitebor dño secm iu
stitiam eius. et psallã nõi
dñi altissimi.
Requiem. ãñ Ne qñ rapiat
ut leo aiam meã dũ non est q
redimat neq; qui saluũ faciat.
℣. A porta inferi. ℟ Erue dñe
aiãs eor. Pater nr. Lõ ỹma.
Dixit michi dñe ne
chil enĩ sunt dies
mei. Quid est homo quia
magnificas eũ aut quid ap

ponus targa eam cor tuū: Vsi
tas eam diluculo et subito
p̄olues illum. Vsq; quo nō
parcas mihi nec dimittis
me ut glutiā salituā meā:
peccaui. Quid faciā tibi o
custos hoim. Quare posui
sti me contrariū tibi et fōs
sum mihimetipi grauis:
Cur non tollis pēm meū
et quare non aufers mīq
tatē meā: Ecce nunc in pul
uere dormiā. et si mane me
quesieris non subsistam.

aū Credo qd̄ redemptor meus vi
uit et in nouissimo die de terra sur

rcturus sum. Et in carne mea vide
bo deū salutatorē meū. ℣. Quem
visurus sum ego ipse et non alius
et oculi mei conspecturi sunt.
Et in carne. Lō secunda.

Sedet aiam meā vite
nee dimittā aduer
sum me eloquium meum.
loquar in amaritudine a
nime mee. dicā deo noli me
condempnare. Indica mihi
cur me ita iudicas. Numqd
bonū tibi videtur si calūp
nieris. et oppримas me opus
manuū tuaꝝ et consiliū
ipiorꝝ adiuues. Numqd ocli

carnea tibi sunt aut sicut
videt homo et tu videbis?
Numquid sicut dies hois dies
tui et anni tui sicut humana
sunt tempora. ut quercas iniq
tatē meā et pēm meū scru
teris. Et scias quia nichil i
piū fecerim. cū sit nemo q
de manu tua possit eruere.
℟ Qui lazarū reliquatalti a mo
rtimento fetidū, tu eas dñe dona
re quē et locū indulgētie. ℣ Qui
venturus es iudicare vivos et mortu
os et sclm̄ p ignē. Tu eas Leō tua
Anus tue dñe fece
runt me et plasma

uerunt me totū in arcutu
et lic repente p̄cipitas me.
Memento quelo qđ sicut lu
tū fecerus me et in puluere
reduces me. Nōne sicut lac
mulasti me et sicut caseū
me coagulasti. Pelle et car
nibz uestisti me. ossibz t ner
uis cōpegisti me. Vitam et
miām tribuisti mihi. t vi
sitacio tua custodiuit spm
meū. Rm Dñe qū veneris iudi
care terrā vbi me absondā a vul
tu tue tue. Quia peccauī manus m
vita mea. ℣. Cōfusa mea pauc
co et añ te erubescoo dū veneris iudi

care noli me condẽpnare. Quia pr
Requiẽ. Qã per. ℟. In loco. ℣ Dñs

Dñs regit me et nichil
michi deerit i loco
pascue ibi me collocauit.
Super aquã refectionis
educauit me animã meam
conuertit.
Eduxit me super semitas
iustitie propter nomen tuũ.
Nam et si ambulauero
in medio umbre mortis no
timebo mala qm̃ tu mecũ es.
Virga tua et baculus tuus
ipsa me consolata sunt.
Parasti in cõspectu meo

mensa aduersus eos qui tri
bulant me
Unxisti in oleo caput
meum et calix meus inebrians
quam preclarus est
Et misericordia tua subsequetur
me omnibus diebus vite mee.
Et ut inhabitem in domo
domini in longitudinem dierum.
Requiem. ℟. In loco pascue ibi
me collocauit. ℣. Delicta. ℣.
Ad te domine leuaui animam
meam deus meus in
te confido non erubescam.
Neque irrideant me inimici
mei etenim vniuersi qui susti

neant te non cõfundentur.
Confundantur os mq̃
agentes iniquitatem.
Vias tuas dñe demonstra
mihi et semitas tuas edoce me.
Dirige me in veritate tua
et doce me q̃a tu es deus salua
tor meus et te sustinui tota die.
Reminiscere miserationũ
tuarũ dñe et misericordiarũ tuarũ que
a seculo sunt.
Delicta iuuentutis mee et
ignorãcias meas ne memineris.
Secundũ misericordiã tuã me
mento mei tu propter bonĩ
tatem tuã dñe

Dulcas et rectus dñs propter hoc legem dabit delictis
quentibz in via.
Dirriget mansuetos i iudicio docebit mites vias suas.
Omnes vie dñi mia et veritas requirentibz testamentū eius et testimonia eius.
Propter nomen tuū dñe propitiaberis peccato meo multum est enim
Quis est hō q timet dñm legē statuit ei in via quā elegit.
Anima eius in bonis demorabit et semen eius hereditabit terrā.
Firmamentū est dñs ti

mentabz eū et testamentū ip
sius ut magnificetur illis.
Oculi mei semper ad dnm qm
ipe euellet de laqo pedes meos.
Respice in me et miserere mei
quia unicus et pauper sū ego.
Tribulationes cordis mei
multiplicate sunt de necessita
tibz meis erue me.
Vide humilitatē meā et labo
rē meum et dimitte uniuer
sa delicta mea.
Respice inimicos meos qm
multiplicati sunt et odio ini
quo oderunt me.
Custodi aiam meā et erue

me non erubescā qñ speraui ī te.
Innocentes et recti adheserūt
mihi quia sustinui te.
Libera deus israel ex oībus
tribulationibz suis.
Requiam. ℟. Delicta iuuētutis
mee & ignorancias meas ne memine
ris. ℣ Credo. ℣ ℟.
Dns illuminatio mea &
salus mea quē timebo
Dns protector vite me a
quo trepidabo.
Dum appropiant sup me no
centes ut edant carnes meas.
Qui tribulant me inimici
mi ipsi infirmati sunt et

cederunt.

Si consistant adversū
me castra nō timebit cor meū.
Si exurgat adversū me
prelium in hoc ego sperabo.
Unā petij a dño hanc re
quiram ut inhabitē in domo
dñi oibz diebz vite mee.
Et videā voluntatē dñi t
visitē templū eius
Quī abscondit me i taber
naculo suo in die malorū
protexit me in abscondito
tabernaculi sui.
In petra exaltauit me et
nunc exaltauit caput meū

super inimicos meos.

Circuiui et immolaui in
tabernaculo eius hostiam uocife
rationis cantabo et psalmum
dicam dño

Exaudi dñe uocem meam
qua clamaui ad te miserere
mei et exaudi me

Tibi dixit cor meum exqui
siui te faciem meam faciem tuam
dñe requiram

Ne auertas faciem tuam a
me ne declines in ira a seruo
tuo.

Adiutor meus esto dñe
ne derelinquas me neq; despi

ttas me deus salutaris meus.
Qm̃ pater meus et mater
mea dereliquerunt me dñs
autē assumpsit me.
Legem pone michi dñe in
via tua et dirige me i semita
recta propter inimicos meos.
Ne tradideris me in aīas
tribulantiū me qm̃ insurre
xerunt in me testes iniqui t
mentata est iniquitas sibi.
Credo videre bona dn̄i in
terra viuentium
Expecta dn̄m viriliter age
confortetur cor tuū et sustī
ne dn̄m

Reginam

Requiē. ℣. Credo videre bona
dñi in terra viuentiū. ℣. Confortet eū
dñs ai principibz. ℟ Cū principibz po
puli sui. Pr̄ nr̄. Et ne nos. Ꝯ mj.

Responde michi quātas
habeo iniquitates et
pcā scelera mea atqz delicta
ostende michi. Cur faciē tuā
abscondis et arbitraris me
inimicū tuū? Contra folium
qđ vento rapitur ostendis po
tentiā tuam et stipulā siccā
persequeris. Scribis enī cōtra
me amaritudines et consu
mere me vis pcīs adolescentiae
mee. Posuisti in nervo pedem

meū et obseruasti ōēs semitas
meas et vestigia pedū meorū
considerasti. Quū quasi pu
tredo cōsumendus sū et qī
vestimentū qđ comeditur a
tinea. ℟ Memento mei deus qa
ventus est vita mea. Ne aspiciat
me vltus hoīs. ℣. De profundis
clamaui ad te dñe domine exaudi
vocem meam. Nec. Lō quinta.

Homo natus de mulie
re byeu viuens tpe
repletur multis miseriis. Qui
quasi flos egreditur et cōteri
tur et fugit velut vmbra et
nunqđ in eodē statu permanet.

Et dignū duas super hūmilē
modū aperire oculos tuos t ad
ducere eū tecū in iudicium.
Quis potest facere mundū de
immundo conceptū semine. Nō
ne tu qui solus es. Breues di
es hoīs sunt numerus men
sū eius apud te est. Cōstituu
sti terminos eius qui pyete
riri nō poterunt. Recede ḡ
paululum ab eo vt quiescat
donec optata veniat. et sicut
mercenarij dies eius. Ꝛ Heu
michi dñe quia peccauī nimis in
vita mea quid faciam miser ubi
fugiā nisi ad te deus meus miserē

mea. Dū veneris in nouilio die. V
ia mea turbata est valde sed tu dñe
sustinere a. Dū veneris. Lō sexta
Quis mihi hoc tribu
at ut in inferno pro
tegas me et abscondas me do
nec pertranseat furor tuus. t
constituas mihi tps in quo
memoreris mei? putas ne mor
tuus homo rursū viuat cūc
tis diebus quibus nūc milito
expecto donec veniat immutatio
mea. Vocabis me et ego respon
debo tibi. opus manuū tuaz
porriges dexteraz. Tu quidē gres
sus meos dinumerasti. sed pere

pcās meis. ℟ Ne tradideris pcā meā
dñe. dum veneris iudicare sclm̄ per ig
nē. ℣ Dirige dñe deus meus in con
spectu tuo viā meā. Dū ve. ℟. Coplacent.

Expectans expectauī ps
dnm̄ et intendit mihi.
Et exaudiuit preces meas t
eduxit me de lacu miserie et
de luto fecis.
Et statuit supra petrā pe
des meos et direxit gressus meos.
Et imisit in os meū canticū
nouū carmen deo nostro.
Videbunt multi et timebūt
et sperabunt in dño.
Beatus vir cuius ē nomen

dñi ſpes eius t nō reſpexit i ſa
ſtates et ſtanuas fallas.
Multa feciſti tu dñe dꝰ me⁹
mirabilia tua t cogitationib⁹
tuis nō eſt qꝫ ſimilis tibi.
Annūciaui et loquutus ſū
multiplicati ſunt ſup numerū.
Sacrificiū t oblationē nolu
iſti aures autē perfeciſti mihi.
Holocaustū et pꝛo peccto nō
poſtulaſti tūc dixi ecce venio.
In capite libꝛi ſcriptū eſt
de me ut faciē voluntatē tu
am deus meus volui et legē
tuā in medio cordis mei.
Annūciaui iuſtitiā tuā

in ecclia magna eare labia
mea nō phibebo dñe tu scisti.
Iustitiā tuā non abscondi
in corde meo veritatē tuā et
salutare tuū dixi. Non abscondi miām tuā
et veritatē tuā a cōsilio multo.
Tu autē dñe ne longe facias
as miserationes tuas a me
nia et veritas tua semper suscepe
rūt me. Cōmi circūdederunt me
mala quoꝝ nō est numerus
cōprehenderūt me miq̄tates
mee et non potui ut viderē.
Multiplicati sunt super

capillos capitis mei et qui me
um dereliquit me.
Complaceat tibi dñe ut
eruas me ad adiuuandum
me respice.
Confundantur et reuere
antur simul qui querunt
aiam meã ut auferant eam.
Conuertantur retrorsũ et
reuerentur qui volunt mi
hi mala.
Erant confestim confusio
nẽ suam qui dicunt michi
euge euge.
Exultent et letentur super
te omnes querentes te et dicant

ſemper magnificetur dñs qui
diligunt ſalutare tuum.
Ego autē mendicus ſū et
pauper dñs ſollicitus eſt me.
Adiutor meus et protector
meus es tu deus meus ne tar
daueris.
Requiē. ℟ Cōplaceat tibi dñe
ut eruas me ad adiuuandū me
℣ reſpice. aīe Sana dñe. ℣ Dauid
Beatus qui intelligit
ſuper egenū t pauperē
in die mala liberauit eū dñs.
Dñs conſeruet eū et viuī
ficet eū et beatū faciet eū in
terra et nō tradat eū in aīam

numcor eius.

Dns opem ferat illi super
lectū doloris eius vniuersū
stratū eius versasti in infir
mitate eius.

Ego dixi dne miserere mei
sana animam meam quia pec
cauī tibi.

Inimici mei dixerunt
mala mihi quando morie
tur et peribit nomen eius.

Et si ingrediebatur videbat
ut videret vana loquebatur
cor eius congregauit iniquitatē.

Egrediebatur foras et lo
quebatur in idipsum.

Aduersū me iniquitates
omnis virtutis mee aduersū
me cogitabant mala multa.
Verbum iniquū constituer
erunt aduersū me numquid
qui dormit non adiicet ut
resurgat.

Et enī homo pacis mee
in quo speraui qui edebat pa
nes meos magnificauit su
per me supplantationem.
Tu autē dne miserē mei
et resuscita me et retribuā eis.
In hoc cognoui quīm volu
sta me quīm non gaudebit ini
micus meus super me.

De autē ꝓpter ignorantia
am hui⁹ce ꝑpetra et ōmissa ste
me in conspectu tuo ī eternū.
Benedictus dñs deus israel
a seculo et usq; ī scm̄ fiat fiat.
Requiem. ℟. Sana dñe aiam
meā quia peccaui tibi. ℟ Sicut
Sicut ceruus ad fontes aq̄
rum desiderat
ad te deus.
Sitiuit aia mea ad deum
fontē viuū quando veniā et
appārebo ante faciē dei
Fuerunt mihi lacrime
mee panes die ac nocte dum

diatur mihi quotidie ubi
est deus tuus.

Hec recordatus sui et effudi
in me aiam meā qm̄ trāsibo
in locū tabernaculi admira
bilis usq; ad domū dei

In voce exultationis et cō
fessionis sonus epulantis.

Quare tristis es aīa mea t
quare conturbas me.

Spera in deo qm̄ adhuc cō
fitebor illi salutare vultus
mei et deus meus

Ad meipm aīa mea con
turbata ē propterea memor
ero tui de terra iordanis t her

mony a monte modico.
Abyssus abyssū invocat i
voce cataractay tuarum.
Omnia excelsa tua et fluctꝰ
tui super me transierunt.
In die mandauit dns
misericordiam suā et nocte canti
cum eius.
Dixi deo vite mee
susceptoꝛ meus es.
Quare obliuiscis mei et q
re tristis incedo dū affligit
me inimicus.
Dum cōfringūtur ossa
mea exprobauerunt mihi q
tribulant me inimici mei.

Dicunt michi per singulos dies vbi est deus tuus quare tristis es aia mea. & que conturbas me.

Spera in deo qm adhuc confitebor illi salutare vultus mei et deus meus.

Requiem. ℟. Sitiuit aia mea ad deū fontē viuū qm veniam et apparebo ante faciē dei. ℣. Ne tradas bestijs aias confitentiū tibi. ℟. Et aias pauperū tuoꝝ ne obliuiscaris in finē. ℣. Qm ne Lectio vij.

Spūs meus attenuabitur dies mei breuiabuntur et solū michi sup

est sepulcrū. Non peccauī et ut
amaritudinibꝰ moꝛatur oꝰs
meus. libera me dñe et pone
me iuxta te et cuius vis man²
pugnet contra me. Dies mei
trānsierunt cogitationes mee
dissipate sunt toꝛquentes coꝛ
meū. Nocte uerterunt in die et
iterū post tenebꝛas spero lucē.
Si sustinuero infernus dom²
mea est et in tenebꝛis stratū
lectulū meū. Putredini dixi.
pater meus es et mater mea t
soꝛoꝛ mea vermibꝰ. Ubi est ergo
nunc pꝛestolatio mea et pa
tientia mea tu es dñe ds meus.

℟. peccantē me cotidie et non me
penitentē tumor mortis conturbat
me. Quia in inferno nulla est redēp
tio. miserere mei deus et salua me. ℣
Deus in nomē tuo saluū me fac et i
virtute tua iudica me. Quia i infer.

Uelli mee con Lcō vii.
sumptis carnibz adhesit
os meum et derelicta sunt tan
tūmodo labia circa dentes meos.
Miserimini mei miserimini
mei saltē vos amici mei quia
manus dñi tetigit me. Quare
persequimini me sicut deus t
carnibz meis saturamini. Os
mihi hoc tribuat ut scribātur

sermones mei. Quis mi det
ut exarentur in libro stilo
ferreo et plūbi lamina uel
cælte sculpantur in silice. Scio
enī qđ redemptor meus viuit
et in nouissimo die de tra surr
recturus sū. et rursū circūdabor
denuo pelle mea et in carne
mea videbo deū saluatorem
meū. Quē visurus sū ego
ipse et oculi mei cōspectum sui
et non alius. Reposita est hec
spes mea in sinu meo. ℟ Dne
secūm actū meū noli me iudicare
nichil digni in cōspectu tuo agi.
Ideo deprecor maiestatē tuā ut tu ds

deleas iniquitatem meam. ℣ Amplius
lauа me ab iniustitiа meа et a de
licto meo munda me. ℟ deo. Vertig
uaxe de vultua ꝙ̄.
eduxasti me q̄ vtinā
conclusptus essem ne oculus
meus videret. ffruustrā quasi
qui non essē de vtero trasla
tus ad tumulū. Nunq̄d nō
paucitas dierū meoꝝ finietur
breui. Dimitte ergo ut plan
gā paululū dolorē meū ante
quā vadā et non reuertar ad
terrā tenebrosā et opertā mor
tis caligine. Terrā miserie et
tenebraꝝ ubi vmbra mortis

et nullus ordo sed sempiternus
horror inhabitat. ℟ Libera me
dne de morte eterna. in die illa tre
menda. qñ cli moti sunt et
terra. dū veneris iudicare sclm per
ignē. ℣ Tremens factus sū ego et ti
meo dū discussio veniat atq; ven
tura ira. In die. ℟ Dies illa dies
ire calamitatis et miserie dies mag
na et amara valde. Qñ cli. ℣ Re
quiē eternā dona eis dne et lux
perpetua luceat eis. Dū ve. ℟ Li
bera me dne de viis inferni q̄ por
tas eneas cōfregisti et visitasti i.
ferni. Et dedisti eis lumen ut vi
derent te qui erant i penis tenebra.

clamantes et dicentes aduenisti redep
tor mr̃. et dedisti. ℟. Exultabunt. ℣.
Miserere mei deus secm̃ . vts.
℟ Exultabit dño ossa hũiliata. ℟
Exaudi. psalmus dauid.
Te decet hymnus deus in
syon et tibi reddetur vo
tum in ierlm̃
Exaudi deus oronem meã
ad te omis caro veniet
Cuncta utiquor prenaluerũt
super nos et spectatibz nostris
tu propiciaberis.
Beatus quẽ elegisti et assump
sisti habitabit in atriis tuis.
Replebimur in bonis dom̃

tuc scñ est templū tuū mira
bile in equitate
Exaudi nos deus salutaris
noster spes omn̄ finiū terre t
in mari longe
Preparans montes in vir
tute tua accinctus potencia q
conturbas profundū maris
sonū fluctuū eius
Turbabuntur gētes et ti
mebunt qui habitant termi
nos a signis tuis exitus ma
tutini et vespere delectabis.
Visitasti terrā et inebria
sti eā multiplicasti locuple
tare eam

Flumen dei repletū est a
quis parasti cibū illoꝝ quo
nia ē preparatio eius
Rivos eius inebrians mul
tiplica genimina eius in stil
licidiis letabitur germinans.
Benedices corone anni be
nignitatis tue et campi tui re
plebuntur ubertate.
Pinguescent speciosa deser
ti et exultatione colles ac
cingentur
Induti sunt arietes ouium
et valles habundabunt fru-
mento clamabunt et enim hym
num dicent.

equiē. ℟ Exaudi dṡ oṙonē meā
ad te oīs caro ueniet. ℟ Qm̄ suscepit ps̄
eus dṡ meus ad te. vls̄.
℟ Qm̄ suscepit dextera tua dn̄e. ℟
A porta inferi. psalmus dd̄.
Ego dixi in dimidio
dieꝝ meoꝝ vadā ad
portas inferi
Quietum rebidui annoꝝ
meoꝝ dixi non videbo dñm
dm̄ in terra viuentiū
Non aspiciā hoiem vltra
nec habitatoꝛe quietis
Generatio mea ablata et
conuoluta est a me quasi
tabernaculi pastoꝝ.

Occasa est velut a texente
vita mea dū adhuc o⁹ducet
succidit me de mane usq; ad
vesperā finues me.
Sperabā usq; ad mane qđ
leo sic cōtruit oīa ossa mea.
De mane usq; ad vesperā
finues me sicut pullus hyrū
dinis sic clamabo meditabo⁹
ut columba
Attenuati sunt oculi mei
suspicientes in excelso.
Dne vim pacior⁹ respond⁹
pro me quid dicā aut quis
respondebit michi cū ipe fecerit.
Recogitabo tibi oēs annos

meos in amaritudie aie mee.
Ne si sic vivitur et in talibz vita spūs mei cōsumpcios me et vivificabis me tace in pace amaritudo mea amarissima.
Tu autē erudisti aiam meam ut nō periret proiecisti post tergū tuū oīa pcā mea.
Quia non infernus cōfitebitur tibi neqz laudabit te nō expectabūt qui descendūt in lacū veritatem tuā
Vivens vivens ipse cōfitebitur tibi sicut et ego hodie pater filijs notā faciet veritatē tuam.

Dñe saluū me fac et pſal
mos nr̄os cantabimus cūctis
diebꝫ vite nr̄e in domo dñi .
Requiē. ℟. A porta īferi eruе
dñe aīas eoꝝ. ℟. Qui ſpūs . ℣
Laudate dñm de celis .
℟ Qui ſps laudet dicat. ℣. Audiui
uocē de celo dicentē mihi. ℟ Beati
mortui q̄ in dño moriuntur. ℟ Ego ſū.
Benedicꝫ dñs dꝫ ifer. vtꝫ .
℟. Ego ſū resurrectio et vita q̄ cre
dit in me etiā ſi mortuus fuerit
viuet et oīs q̄ viuit et credit ī me
nō morietur īeternū. pr̄ nr̄. ℣
De profundis da. vtꝫ . ℣
A porta īferi. ℟ Eruе dñe aīas eoꝝ

 Oro

Deus qui nos p̄cam. vts.
Deus venie largitor vts.
Quibus deus omn̄. vts.

Oro de ma dña valde devota.



Vlcro te dña sca
maria mater dei
pietate plenissima
Summi regis filia
mater gloriosissima. mater o
pium. consolatio desolatoz.
ma exulum salus in te spes
cū. Virgo ante partū virgo
in partu et virgo post partū.
Fons nūe fons salutis et gr̄e

fons pietatis et letitie. fons cō
solationis et ꝺoulgitie. per
illā sanctā inestimabilē leti
ciā qua exaltauit sps tuus u
illa hora qñ tibi per gabrielē
archangelū annūciatus et con
ceptus filius ꝺei fuit. Et per il
lud diuinū misterū qꝺ tunc
operatus est sps scs. et per illā
sanctā inestimabilē pietatē
gratiā amorē et humilitatē per
quas filius tuus ꝺelendit
accipere humanam carnē ut de
nece rebellionis ꝺoloso tuo. et u
quibꝫ te despexit qñ te cōmen
ꝺauit scō voluntum aplō et eu

uangelizaste. et quando te exal
tauit super choros angelorū.
et per illam scām inextimabi
lem humilitatē in qua tu re
spondisti archangelo gabrie
li. Ecce ancilla dñi fiat mihi
scdm verbū tuū. Et per illa
scām quindecī gaudia q̄
habuisti de filio tuo dño nro
ihū xpo. Et per illam sanctā
maximā cōpassionē et acer
bissimū cordis dolorē quem
habuisti q̄n vidisti filiū tuū
dñm nostrū ihm xpm ante
crucē nudatū et in cpa lauatū
vidisti pendentē cruciferū vul

nerati lacrimē fel appona. Ex
li clamantē audisti et mouen
tem vidisti. et per quinq; vul
nera filij tui et per contractio
nē vlcerū suor pre nimio do
lore vulnerū. Et per dolorem
quē habuisti quando vidisti
eū vulnerari. et per fontes la
crimaru suu. et per omnē palli
onē eius et per omnē dolorē
cordis tui et per fontes lacri
mar tuar. ut cū oīb; sanc et
electis dei veni et celestina mi
auxiliū et consiliū meū et
in omnib; operacionib; et requi
sitis meis. et in oīb; operacionib;

et necessitatibz meis et i oibz
illis rebz in quibz ego sñ factu
rus locuturus aut cogitaturus
oibz diebz et noctibz horis atq;
momentis vite mee. Et m
famulo tuo ispetues a di
lecto filio tuo cõplementu.
oi mia et cõsolatione. omi
consilio oi auxilio et adiu
torio. oi benedictione et sãi
tatione. omi saluatõe pace
et prosperitate. oi gaudio t
alacritate. ꝙa habundan
ca oim bonoz spualiu et
tporaliu. et gracia sñi spus
qui me bene pr oia dispo

nat (diam)

nat. aiam meā custodiat. Corpus
meū regat. mentē erigat. cursū
dirigat. sensū seruet. mores cō
ponat. Actus probet vota et deli
deria mea perficiat. Cogitatoēs
sc̄as instituat. preterita mala
indulgeat. presentia emendet.
futura moderetur. Vitā hone
stam et honorabilē michi tri
buat. Et victoriā contra oēs
aduersitates huius mundi
Dona pacē sp̄ualē et corporalē
michi tribuat. bonā spem ha
bitatē et fidē caritatē humilita
tē et patientiā. Quinq; sensus
corpus meū regat et protegat

Et septē opera mīe cōplere me
facaat. Et ducdecī articulos fidei
decēqz precepta legis firmiter
credere et tenere me facaat. Et
a septē penis animabz me
liberet et defendat usqz i finē.
Et in nouissis diebz meis ostē
de machi facaē tuā. Et animā
aes machi diē et hoīa obitus
mei. Et hāc oīationē supplicē
suscipias et exaudias. et vitā
eternā michi tribuas. Audi
et exaudi me dulcissima vir
go maria mater dei et mi
seracordie. Amen

De beata barbara antiph;

beata barbara cui tota trinitas fuit revelata. nervus taurinus ver berata. ahenus teretis intricata. sanguine perfusa. mamillis abscisa. denudata vestimentis. sed stola candida ab angelo allata qua induta a diolcoro p̄re tuo tuisti martirizata.

℣ Ora p̄o nobis beata virgo et martir barbara. ℟ Ut digni effici amur p̄romissionibꝫ xp̄i. Oremꝰ. Oꝝ

Deus amator pudicie qui ad declarāda merita beate barbare virginis et martiris tue multam pplis ꝙam invocantibꝫ p̄omisisti da nobis qs ita ꝙsus in

terelle cõmemoracion ut ab
hoste cõtrario semp simus
tecum et pia tua memoria
ad gaudia perducamur
eterna. per xpm

Celle deuote benediction dont on
dit le matin et le soir et singu
lierement a la mort.

La sainte paix et bene
diction de nre seigneur
ihucrist. La vertu de la passion
et angoisseuse mort. Leffusion
de son sanc precieux. Et le sig
ne de la sainte croix. Les mer
tes et la pointe de la glorieuse
vierge marie la digne mere.

La garde et protection des beaux
anges et archanges des cieulx.
Et la benediction de tous les
saints et saintes de paradis soy
ent auiourdhui et a leure der
raynne du pas estroit de ma
mort. Entre moy et alencontre
de tous mes mauuais ennemis
tant visibles comme invisibles. Amen.

Celor candor splenduit.
Nouū sydus emanut.
Sacer franalcus claruit
Cui seraph apparuit.
Signatus cum caractere
In vulnus plantis latere.
Dū forma carnis gerere
Vultu vide ore opere.
℣. Signalti dne seruū tuū franalcū ℟. Signis redemptionis mē. Ore

Deus qui miranda ōnō
crucis mysteria in beato
franalco cōfessore tuo multi
formiter demonstrasti. da no
bis qs deuotionis hui semper
exempla sectari et assidua cul

dem tuas meditatione mu
nia. per dñm.

Orão ad B. Virginem.

Memorare ó piissima Virgo Maria, non esse auditum à sæculo quemquam, ad tua currentem præsidia, tua implorantem auxilia, tua petentem suffragia, esse derelictum. Ego tali animatus confidentia, ad te Virgo Virginum Mater curro, ad te venio, coram te gemens Peccator assisto. Noli Mater Verbi, verba mea despicere, sed audi propitia & exaudi. Amen.

## 1606.

Le lundy 3 de Juin Je me mariay auec damᵉ Jeanne Bernard fille de Monsieur Bernard lieutenant gñal a chalon & de Damᵉ Marguerite Paradin.

Le 6. de Septembre suiuant Je sortis de cette ville pour mon voyage d'Italie auec Monsʳ Bernard mon beaufrere. & en retournames le 6 Apuril suiuant

## 1607.

Le 27 de Decembre de cette annee, mourut mon cousin Mᵉ Bernard cousin dame melancolie dont ie fus tresmarry

## 1608.

Le 24 de Januier 1608 naquit Gabrielle a 4 heur. vn quart apres midy & le 25 fut baptisee a saint Michel son parrain fut Monsʳ Maclou Brocard capitaine des gardes de Monsʳ nostre Gouuerneur & Marraine Damᵉ Gabrielle Chignot de Monpasté ma mere.

Le 26 Mars suiuant Madᵉ Guillemette Tabourot vefue de feu Monsʳ le Conseiller Fremiot ma cousine mourut.

## 1609.

Le lundy 23 de Mars 1609 Monsieur le lieutenant Bernard mourut a chalon plaint & regretté de tous les gens de bien.

Le 13 de May suiuant a six heures du matin pendant que Jestois a Chalon naquit Theodote Tabourot. Son parrain fut Monsʳ lofficial mon Oncle par son procureur special Monsʳ le lieutenant Tabourot mon bon Cousin leur Sa Marraine Madᵉ Catharine Juret femme de Monsieur Bossyer conseiller au parlement. Hunc placido lumine videant Planetæ.

## 1610.

Le vendredy 9 de Juillet naquit sur les sept heures trois quarts du matin Ludith et fut baptisee le 13 a nostre Dame Sa marraine fut Damᵉ Judith Quinot vefue de feu Monsʳ le lieutenant Bernard Et son parrain Monsʳ Rougeot mon beaufrere.

## 1611.

Le Dimanche 9 doctobre iour de saint Denys naquit a vne heure vn quart apres midy Jaqueline Et fut baptisee a Nostre Dame Sa marraine fut Damᵉ Jaquette Bouuot nostre cousine Et eut pour Parrain Monsʳ le lieutenant Bernard mon beaufrere

## 1613

Le lundy 25 de feburier lendemain de saint Mathias naquit Charlotte a deux heures enuiron quinze minutes apres midy. Sa marraine fut Damᵉ charlotte Bourgeois femme de Monsieur le president Desbarres. Et son parrain Mᵉ claude Bernard aduocat a la Cour son oncle maternel.

## 1614

Le mardy 13 de may 1614 a la demie apres minuit naquit Oudette

Tabourot baptisee le lendemain a nostre Dame Sa marraine fut Dam^lle Oudette Maillard femme de Monsieur le thresorier Legou mon Cousin Et eut pour parrain Mons^r le Lieutenant Tabourot mon cousin

## 1615.

Le lundy 23 Febvrier veille de Saint Mathias mourut dam^lle Didiere Tabourot femme du fut sieur Cussin pere qui auoit eu tout le bien de nostre maison

Le lundy 23 Nouembre iour de saint Clement naquit Estienne Tabourot a neuf heures trois quarts du matin baptisé le lendemain a nostre dame, Son parrain fut Mons^r le secretaire Arnise Et sa marraine Dam^lle Perrinette Bernard femme de Mons^r le maistre des comptes Roux.

## 1617.

Le mardy Jour de Toussaints 1 de Nouembre naquit Pierre Tabourot a quatre heures vn quart apres midy et fut baptisé le Jeudy suiuant a nostre Dame Il eut pour Parrain Mons^r le Conseiller Saumaise dit de Chazans Et pour marraine Dam^lle Magdalene Giroux femme de Mons^r le Conseiller Bouhyer fils mon bon Amy

## 1619.

Le Jour de saint Marc 25 Auril vn Jeudy a deux heures & demie apres Midy naquit Nicolas Et fut baptisé le 2^e de May suiuant Son parrain fut monsieur le lieutenant particulier Matthieu de Chalon pour lequel mons^r Roux presta la main Et sa marraine fut Madamoiselle Claude Joly femme de Monsieur le thresorier Gaigne.

## 1620.

Le lundy 16 de Nouembre naquit Jeanneton a trois heures et demie auant midy Son parrain fut Monsieur le Conseiller Massol mon Cousin Et sa Marraine Dame Jeanne Vadot femme de Monsieur le president Giroux et fut baptisee le mardy a nostre Dame.

## 1622.

Le mardy 23 Mars naquit a deux heures & demie du matin Marc Anthoine tabourot batisé le mesme Jour a nostre Dame Il eut pour Parrain Monsieur Marc Anthoine de la Tour mon cousin Et pour Marraine Dam^lle Marthe Barbisey femme de monsieur le president Il mourut le 30 Suiuant et est enterré a n^re Dame en la chapelle de Bergeon.

## 1628.

Le 11 Decembre Dam^lle Gabrielle Chiquot de Monpashy ma mere mourut et fut enterree a S^t Jean.

1629.

Le 1er Janvier 1629 Le Roy Loys 13 de ce nom fit son Entree en cette ville allant en piedmont.

1630.

Le dimanche 23e Juin Charlotte fut receue religieuse au Conuent de sainte Claire a Bellegarde

Le lundy 29 Juillet Gabielle fut mariee au sieur Longinot aduocat demeurant a Langres Et furent faittes ces nopces a saint Aplomet

1631.

Le mardy 21 de Janvier Theodocte Tabouret fut receu chanoine en leglise de Saint Mammete de Langres par la demission de Mons[r] lofficial Tabouret mon oncle. ce ne fut pas sans peine.

Le vendredy 7 feburier suiuant de la mesme annee 1631 le sieur Tabouret mon oncle mourut en sa maison a Langres Et me laissa son heritier suiuant la Coustume de Sens.

1bcccciiii

Le sammedict dixzeme de septembre mon cher mary mourut entre ~~cinq~~ ~~heure~~ et a La menuis soudemant dieu par sa bonte Luy face misericorde y lee ostes plaine et regrette de tous les gens de bien y lee enfarre au reuerant pere iacoupin cu y sent demande

Mon fils ostienne Labouree et sa famme mon faict ce bien et ce plaisir de man noie[e] leur peteife fille ma fillouille icanne Labouree le iour de sa sainte Ereniee 1bcccc&v elle feut baptise le ctii icun 1bccccn dieu la face bien saige